चौथा वर्ष

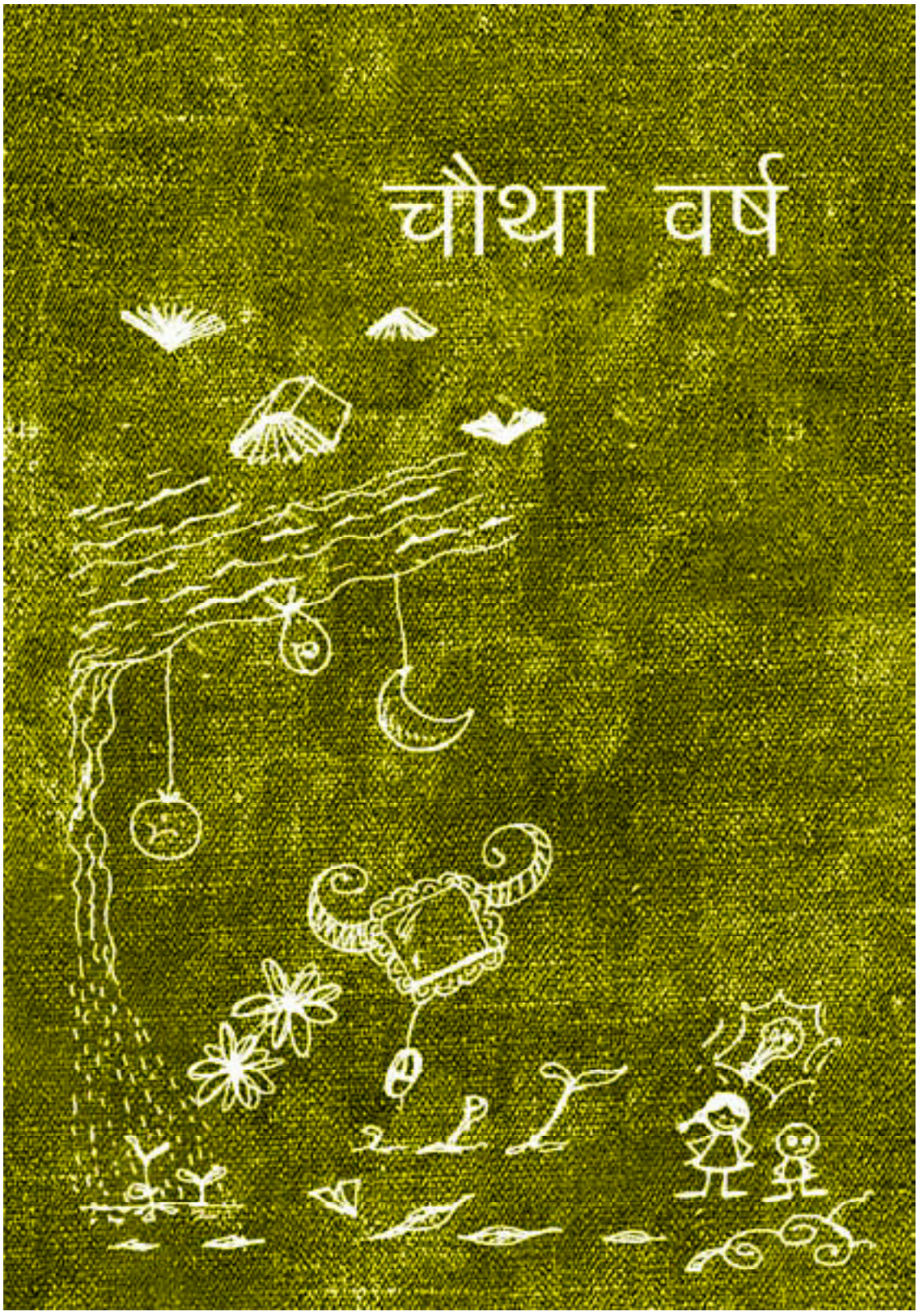

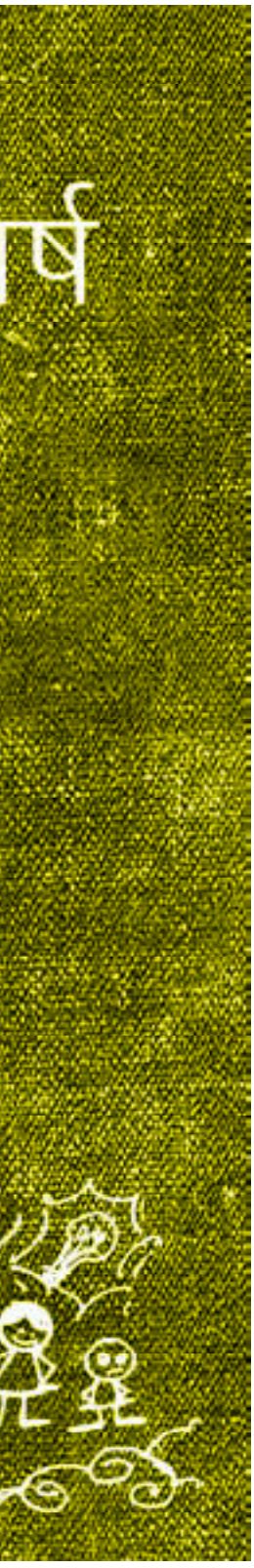

9

हमने लोकतंत्र में जीना सीखा

रविवार, 3 सितम्बर 1939

इस वर्ष की गर्मियाँ सुकून देने वाली रहीं। मैंने अपना अधिकांश समय बाहर लम्बी सैरों पर जाते और तैरते बिताया और अब मैं स्वस्थ और तरोताज़ा महसूस कर रही हूँ। मैंने कई शान्त घण्टे पहाड़ की चोटी पर अपने पसन्दीदा सेब के पेड़ तले बैठ घुमावदार नदी को बहते देखते हुए बिताए। अक्सर मेरी आँखें पढ़ते-पढ़ते थक जातीं, तब मैं घास पर पीठ के बल पसर सेब की आँकी-बाँकी शाखाओं के बीच से आसमान को ताकती, जहाँ बादल अलस गति से गुज़रते। मैं खुद के बारे में सोचती, उन सब अद्‌भुत चीज़ों के बारे में जो मेरे साथ घट रही हैं। वे सभी चीज़ें जो मैं चाहती हूँ कि उन लड़के-लड़कियों के साथ हों जिन्हें मैं पढ़ाती हूँ, वे मेरे साथ भी हो रही हैं। मैं अपनी क्षमताओं, इस दुनिया में अपने स्थान को लेकर सचेत हो चली हूँ। मैं खूब मेहनत से पढ़ रही हूँ और उन सबकी बातें ध्यान से सुनती हूँ जिन्हें मुझसे भिन्न और अधिक अनुभव हुए हैं और मुझे लगता है कि जो कुछ वे कहते हैं उसका हरेक शब्द मैं समझ पा रही हूँ। मैं अक्सर काफी कठिनाई उठा, हताशा झेलते हुए भी बार-बार उन शब्दों को परखने और अपने कर्म में उतारने की चेष्टा करती हूँ, और अचानक वे शब्द नए अर्थ ले लेते हैं। तब लगता है कि मैं पहले वह सब समझती और जानती ही न थी, पर अब जानने लगी हूँ। मैं यह भी महसूस करती हूँ कि कई ऐसी चीज़ें जिनको मैं मानती हूँ कि मैं समझ गई हूँ, वे चैतन्य अनुभव की चेष्टाओं के चलते किसी दिन अचानक ही एक नया और अधिक समग्र अर्थ ले लेंगी। मैंने पाया है कि मैं कई ऐसे काम करना सीख सकती हूँ जिन्हें पहले मैंने कभी नहीं किया है। मैं भी जीवन का सामना रचनात्मक तरीके से कर

सकती हूँ और इसे अपने और दूसरे लोगों के लिए एक बेहतर स्थान बना सकती हूँ। यह एहसास अद्‌भुत है, उत्साहवर्धक है और नई आशा जगाता है! लगता है कि आज मैं यह बेहतर तरीके से समझ पाई हूँ कि वॉल्ट व्हिटमैन क्यों हमेशा हरेक चीज़ के विषय में गाना चाहते थे।

और मैं स्कूल के आगामी सत्र और उसमें हमारे लिए विकास की नई सम्भावनाओं के बारे में भी सोचती रही हूँ। मैंने बारी-बारी हरेक बच्चे के बारे में सोचा। एक और साल उनके साथ बिताना अच्छा लगेगा। हम साथ-साथ काम करेंगे और अपने साझा जीवन को बेहतर बना सकेंगे। क्योंकि रास्ता कितना भी असम्भव क्यों न लगे, अगर हम उतना-सा कर लें जितना हमें समझ आ रहा हो, तो अगला चरण अधिक साफ हो जाता है।

जब वे जीवन शुरू करते हैं तो नन्हे बच्चे जिज्ञासु, खोजी इन्सान होते हैं। वे अपनी समस्त इन्द्रियों की मदद से दुनिया की अनूठी-अनोखी चीज़ें तलाशते हैं। वे समग्रता में जीकर सीखते हैं। पर केवल इतना ही नहीं है। उन्होंने जो कुछ सीखा होता है उसे वे अपने कर्म में उतारते हैं। जो सीखा होता है उसका उपयोग वे पहले जैसी या नई स्थितियों में करते हैं। तब बच्चे स्कूल आते हैं और स्कूल उनकी इन्द्रियों को "बाँध देता" है। उन्हें कुछ बोलना नहीं है। उन्हें चलना-फिरना नहीं है। उन्हें महसूस नहीं करना है। उन्हें केवल वही देखना है जो शिक्षक चाहते हैं कि वे देखें। गत तीन वर्षों से मैंने बच्चों की सीखने की सहज-नैसर्गिक इच्छा को वापस लाने की कोशिश की है, जैसी वृत्ति उनके जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में होती है और जिसे उनके माता-पिता व शिक्षकों, जिनमें मैं भी शामिल हूँ, ने व्यवस्थित रूप से उनसे छीना है। क्योंकि मुझे पुराने तौर-तरीकों से पढ़ाया गया था, इसलिए अगर मैं हर पल चौकन्नी न रहूँ तो बड़ी आसानी से उन्हीं विधियों पर लौट जाती हूँ। मुझे लगता है कि मैंने क्रमशः बच्चों में सीखते रहने की इच्छा जगाई है। इस दृष्टिकोण को बनाना सबसे ज़रूरी है, क्योंकि इसके अभाव में बच्चे न केवल तैयारी करना बन्द कर देते हैं बल्कि वे उन नैसर्गिक क्षमताओं को भी खो देते हैं जो उन्हें जीवन की स्थितियों से निपटने में मदद करती हैं। अब जबकि बच्चे सीखना चाहते हैं, उन्हें सिखाने का, उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि मैं हरेक मौजूदा अनुभव से उपयोगी अर्थ निकालने में उनकी मदद करूँ। वर्तमान में समग्रता से जी पाना ही उन्हें भावी गहरे और व्यापक अनुभवों के लिए तैयार करेगा।

सोमवार, 4 सितम्बर

आज आठ माताएँ और छह हाई स्कूल छात्राएँ शाला भवन में एकत्रित हुईं ताकि मिस मोरान से सब्जियों को सही तरह से डिब्बाबन्द करना सीख सकें। श्रीमती प्रिन्लैक तो अपने नन्हे शिशु को अपने पति की देख-रेख में छोड़कर आईं जिन्होंने उन्हें खुशी-खुशी आने दिया ताकि उनकी पत्नी सब्ज़ियों को डिब्बाबन्द करने के बारे में कुछ नए विचार लेकर लौटे। लगता है श्री प्रिन्लैक शिक्षा के बारे में अपने विचार बदल रहे हैं, खासकर जब उनमें प्रौढ़ शिक्षा भी शामिल हो रही हो!

पिछले बसन्त के समय कुछ अभिभावकों ने यह इच्छा जताई थी कि वे अपने बाग-बगीचे का बेहतर उपयोग करना सीखना चाहते हैं। मैंने मिस मोरान व श्री लोरेंज़ो से मदद माँगी। उन्होंने राज्य कृषि महाविद्यालय की खाद्य विशेषज्ञ मिस डोएरमैन और उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले की सेवाएँ हासिल कीं। 28 अप्रैल को हुई एक बैठक में चौदह माता-पिता, युवा व बच्चे, जो इलाके में बसे आधे परिवारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, शाला भवन में एकत्रित हुए ताकि राज्य स्तरीय विशेषज्ञों व काउंटी के कृषि विस्तार कर्मियों के मार्गदर्शन में बसन्त में अपने बागों की योजना बना सकें। हमने अपनी समस्याओं पर चर्चा की, उनसे सलाह ली और उपयोगी छपी सामग्री पाई। दो भावी बैठकों की योजना भी बनी, पहली जिसमें डिब्बाबन्दी के बेहतर तरीके सीखने थे और दूसरी जिसमें भारी मात्रा में उगने वाली सब्ज़ियों के भण्डारण के गुर सीखे जाने थे।

बुधवार, 6 सितम्बर

आज सभी बच्चों ने उत्साह से एक-दूसरे का और अपनी शिक्षिका का अभिवादन किया। श्रीमती लैनिक ने बताया कि सैली से नाश्ता तक नहीं खाया जा रहा था क्योंकि वह स्कूल आने को बेताब थी। नए साल के प्रारम्भ में अमूमन जो झिझक बच्चों में दिखती रही है, लगता है उसे ये बच्चे भूल चुके हैं।

इस साल स्कूल में तीस बच्चे हैं। डण्डर परिवार गत क्रिसमस के बाद शहर रहने चला गया और जोसेफ को मनोचिकित्सा संस्था में भर्ती करवा दिया गया है। बर्था श्मिट भी स्कूल छोड़ गई क्योंकि उसकी माँ वापस शहर चली गईं। ओल्सेउस्की परिवार विलियम्स के घर के पास जा बसा ताकि प्रिन्लैक परिवार

से दूर रह सके। इससे दोनों ही परिवार गर्मियों भर शान्ति से रहे। पिछले बसन्त दो नए लड़के स्कूल में दाखिल हुए। डेनियल कोल के माता-पिता ने अप्रैल में ओल्सेउस्की परिवार का खेत खरीद लिया। श्री कोल पहले शहर में कार मैकेनिक थे, पर गिरते स्वास्थ्य के कारण उन्हें अपना काम छोड़ना पड़ा। श्रीमती कोल दोस्ताना महिला हैं और उनके कारण सोमवार को डिब्बाबन्दी सीखने के सत्र में मज़ा आया।

लॉयड मैथ्यूस जून में आया था। जब हमने सुना कि पड़ोस में एक नया लड़का आ बसा है, हमने उसे सत्र के अन्तिम दिनों के लिए स्कूल आने का न्यौता दिया। उसकी माँ तब से कई बार धन्यवाद दे चुकी हैं। उनका कहना है कि लॉयड बड़ा घबराता है और अगर वह हम सबसे पहले न मिल लेता तो पूरी गर्मियाँ इसी चिन्ता में घुलता रहता कि नया स्कूल कैसा होगा और कि वह हमें और हम उसे पसन्द करेंगे या नहीं। लॉयड हमारे साथ समुद्र तट के भ्रमण पर भी गया था, जहाँ उसे बेहद मज़ा आया था। इस पतझड़ वह नया लड़का रहा ही नहीं; वह तो हममें से एक बन चुका है। उसके पिता श्री मैथ्यूस लैंडस्केप बागबान हैं जो खेती के लिए ज़मीन तलाश रहे हैं। श्रीमती मैथ्यूस को सोमवार के डिब्बाबन्दी के सत्र में आकर अच्छा लगा था।

श्री रेमसे कुछ लॉग केबिन बना रहे हैं जिन्हें वे गर्मियों में सैलानियों को किराए पर देंगे। इनमें से एक केबिन में मूडी परिवार गर्मियों के दौरान वैली व्यू में रहा। उन्होंने तय किया कि वे सर्दियाँ भी यहीं बिताएँगे ताकि उनका छह वर्षीय बेटा आर्थर हमारे स्कूल में पढ़ने का अनुभव ले सके। श्रीमती रेमसे को लगता है कि स्कूल ने उनकी बेटी आईरीन को इतनी मदद दी है कि श्रीमती मूडी को भी उम्मीद है कि उनके बेटे आर्थर को भी मदद मिलेगी। आर्थर के पिता इंश्योरेंस एजेंट हैं, सो उन्हें हर रोज़ न्यू यॉर्क जाना-आना पड़ेगा।

तीन शुरुआती बच्चे भी आ जुड़े हैं – एक और प्रिन्लैक, एक और मान, तथा रॉबर्ट लिन्डन। लिन्डन परिवार लड़कों के एक शिविर की देखभाल करता है। हमने पहले दिन की शुरुआत व्यवस्थित रूप से क्लब बैठक के साथ की ताकि उसे नए सत्र के लिए पुनर्गठित किया जा सके। हमने तीन समितियाँ बनाईं, जिनके काम होंगे: गत वर्ष की बैठकों की समीक्षा करना तथा आगामी वर्ष के लिए सुझाव देना, स्कूली व्यवस्था सम्बन्धी ज़िम्मेदारियों के विषय में क्या-क्या

करना है उसकी योजना बनाना, और क्लब के संविधान को जाँचना ताकि उसमें नई बातें जोड़ी जा सकें या पिछली बातें संशोधित की जा सकें।

जब हम खेल-कूद से लौटे, मैंने बच्चों के समक्ष वे पुस्तकें रखीं जिन्हें मैं पुस्तकालय से लाई थी। मैंने प्रत्येक पुस्तक के बारे में कुछ रोचक बातें बताईं। बच्चों ने उनमें से अपनी पसन्द की किताबें चुन लीं और शान्ति से पढ़ने के लिए बैठ गए। जब बाकी बच्चे पढ़ रहे थे, पाँच-छह साल वाले बच्चे मुझे बताने लगे कि उन्होंने गर्मी की छुट्टियों में क्या-क्या मस्ती की। उन्हें स्कूल के लिए सिले गए नए कपड़े खास तौर पर अच्छे लग रहे थे और पहले दिन के लिए हुई तैयारी उन्हें लुभा रही थी। उन्होंने इस सबके बारे में एक कहानी बनाई जो मैंने चार्ट पर लिख दी। हरेक बच्चे ने नए कपड़ों में स्कूल आते खुद का एक-एक चित्र बनाया। साढ़े ग्यारह बजे तक समूह दो, तीन और चार के पठन सत्र बारी-बारी हुए। छोटे बच्चों ने जैसे ही अपना पठन सत्र समाप्त किया, वे बड़ी गेंदें लेकर बाहर खेलने चले गए।

कहानी सुनाने के कालांश में समूचा स्कूल बाहर आ गया। मैंने छोटे बच्चों को "तीन सूअर" नामक कहानी सुनाई और उन्होंने उसका नाट्य रूपान्तर किया। मार्था भी हमारे साथ थी क्योंकि कल वह छोटे बच्चों को सम्हालेगी। शेष बच्चे अलग-अलग पेड़ों की छाया में अपनी-अपनी समितियों में बैठे। खाने के पहले विलियम ने हाथ धोने में छोटे बच्चों की मदद की। मार्था और विलियम ने खाना भी उनके साथ ही खाया। समिति अध्यक्षों ने मेरे साथ खाना खाया ताकि समितियों की प्रगति के बारे में बता सकें।

विश्राम का पीरियड सच में आरामदेह रहा। छोटे बच्चे गर्म घास पर पसर गए और पर्ल उन पर नज़र रखे हुए चुपचाप पढ़ती रही। बड़े बच्चों ने आराम से बैठकर वॉल्ट व्हिटमैन की कविता "द कॉमनप्लेस" सुनी। हमने धीमे स्वरों में कविता के भावार्थ पर बात की, और यहाँ पहाड़ों में हमें जीवन की तमाम अद्‌भुत वस्तुएँ निःशुल्क उपलब्ध हैं यह सोच हम कृतज्ञता से भर उठे।

इसके बाद प्राथमिक समूह के बच्चों ने मेरे साथ वर्तनी और संख्या पर काम किया, जबकि विभिन्न समितियों ने सुबह जो काम प्रारम्भ किए थे उन्हें निपटाया।

दिन समाप्त हुआ तो क्लब बैठक फिर बुलाई गई। मार्था अन्तरिम सभापति रही और उसने सभा का अच्छा संचालन किया। उसने सबसे पहले संविधान समिति को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। वॉरेन ने सूचना दी कि समिति मौजूदा संविधान से सन्तुष्ट है, परन्तु एक संशोधन चाहती है। समिति सदस्यों का मानना था कि स्कूल के कोष में जो राशि है उसे कैसे खर्च किया जाए यह समूह को तय करना चाहिए। उसने संशोधित संविधान पढ़कर सुनाया जिसका सदन ने अनुमोदन किया।

हेलेन ने रख-रखाव समिति का प्रतिवेदन रखा। इस समिति के सदस्यों ने तय किया था कि हरेक काम का विस्तृत वर्णन कार्डों पर लिखा जाए ताकि सबको पता हो कि उसके तहत क्या-क्या करना है। जैसेः

झाड़ना (1)

- समूचे कमरे को झाड़ना।
- दरवाज़ों को झाड़ना।
- पायों को झाड़ना।
- चूल्हे को झाड़ना।
- दोनों छोटी अलमारियों को झाड़ना।
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

झाड़ना (2)

- मेज़-कुर्सियों को झाड़ना।
- काम की बड़ी मेज़ को झाड़ना।
- पियानो को झाड़ना।
- पुस्तकालय की मेज़-कुर्सियों को झाड़ना।
- यह सब सुबह स्कूल से पहले करना है।

पुस्तकालय प्रभारी

- सुबह पुस्तकालय को झाड़ना।
- काम में आ रही किताबों के कार्ड डिब्बे में रखना।
- किताब लौटने पर कार्ड पर लिखे नाम को काटना, कार्ड पुस्तक में रखना और पुस्तक को वापिस अलमारी में रखना।

- पूरा दिन सभी किताबों को यथास्थान रखना।
- घर ले जाने वाली पुस्तकों को दर्ज करने के लिए दिन के अन्त में समय तय करना।
- नई पुस्तकें आने पर उनके कार्ड बनाना।

अगर उपरोक्त व्यवस्था हो तो जिसकी भी काम करने की बारी आए उसे पता होगा कि क्या-क्या काम होते हैं। समूह ने समिति को अनुमति दी कि वह उपरोक्त कार्ड बना डाले।

एल्बर्ट की समिति इस नतीजे पर पहुँची कि क्लब की बैठकें महत्वपूर्ण हैं और उन्हें गम्भीरता से लेना चाहिए। उन्हें लगा कि अध्यक्ष का चुनाव सोच-समझकर करना चाहिए और ऐसे ही छात्र या छात्रा को अध्यक्ष बनाना चाहिए जिसने पिछले अध्यक्षों को पूरा सहयोग दिया हो। समिति को यह भी लगा कि वे स्कूली व्यवस्था की पूरी ज़िम्मेदारियाँ तब बेहतर समझेंगे और सीखेंगे जब मैं उनमें कोई हिस्सा न लूँ। वे क्लब की समूची व्यवस्था स्वयं चलाने की कोशिश करना चाहते हैं और केवल आवश्यकता पड़ने पर ही मेरी मदद लेना चाहते हैं। इस प्रस्ताव पर मतदान हुआ और प्रस्ताव पारित हो गया।

अगला काम था नए पदाधिकारियों का चुनाव। वॉरेन को अध्यक्ष, हेलेन को उपाध्यक्ष, एडवर्ड को सचिव व एन्ड्रयू को कोषाध्यक्ष चुना गया। सदस्यों ने यह निर्णय लिया कि अलमारियों के पर्दों, खेलघर और उसकी मेज़-कुर्सियों को रँगने के लिए रंग, दुनिया का नया नक्शा बनाने के लिए मोमजामे और पुस्तकालय की मेज़ बनाने के लिए लकड़ी पर कुछ राशि खर्च की जाए। शाम घर लौटते समय मैं रास्ते भर गुनगुनाती रही। नया साल अद्‌भुत होने वाला है!

गुरुवार, 7 सितम्बर

आज का दिन कल से भी अधिक सहजता से बीता और शाला का वातावरण खुशनुमा रहा। आर्थर मूडी का आनन्द छलकता रहता है। वह अपनी मेज़ पर बैठा था चमचमाते नए जूतों में, जिन्हें वह सर्दियों के लिए बचा नहीं सका। वह अपना चित्र बना रहा था और बुदबुदाता जा रहा था, "मुझे यह स्कूल अच्छा लग रहा है! मुझे इस स्कूल से प्यार है!"

हर साल नए सत्र के पहले माह हम कुछ समय सीने, रँगने, मरम्मत करने में बिताते हैं ताकि स्कूल और मैदान का रख-रखाव हो सके। आज हमने इसी काम की शुरुआत की। हमें अपने मैदान की चिन्ता अभी भी है, क्योंकि पिछले साल जिस परियोजना के तहत उसे सुधारा जाना था वह परियोजना वैली व्यू से हटा ली गई थी।

शुक्रवार, 8 सितम्बर

आज सबको यों लगा मानो हम छुट्टियों के लिए भी स्कूल से दूर हुए ही न हों। जैसे ही बच्चे शाला पहुँचे, सभी कल शुरू की गई गतिविधियों में पुनः जुट गए। सफाई करने का समय आया ही था कि कोई मेहमान आ पहुँचा। मैं उसे लेकर व्यस्त थी, इधर वॉरेन और हेलेन ने सफाई करवा डाली, समूह के लिए खेल की योजना बनाई, खेल शुरू करवाए और समय समाप्त होने पर पढ़ाई-लिखाई के काम भी शुरू करवा डाले। बच्चों ने आगामी बीस मिनट तक अपना काम शान्ति से किया। मार्था ने पूरे आत्मविश्वास के साथ प्राथमिक समूह के साथ पठन कार्य शुरू किया। नए सत्र के तीसरे दिन यह सब आश्चर्यजनक लगा। यह स्पष्ट था कि बच्चों ने पिछले साल जो सीखा था, वे उसका भरपूर उपयोग कर रहे थे।

इस सबका काफी श्रेय श्रीमती मान को जाता है। वे गर्मी की छुट्टियों में इच्छुक लड़कों को इकट्ठा कर तैरने ले जाती रहीं। हिल बच्चों को गर्मी बिताने आने वाले परिवारों के बच्चों में अच्छे दोस्त मिले। श्री प्रिन्लैक ने झरना रोककर पानी भर लिया ताकि उनके बच्चों को तैरने की जगह मिले। एक और बात है जो महत्वपूर्ण है। मैंने चार बड़े लड़कों का आत्मसम्मान बढ़ाने में काफी मेहनत लगाई है। उनके काम में इस कारण क्रमशः काफी सुधार हुआ है। पिछले बसन्त वे इतने उत्साहित हुए कि अगले साल हाई स्कूल जाने की बात उन्हें असम्भव नहीं लग रही है। वे लगातार ऐसे सवाल पूछकर इस साल की पूर्वानुभूति करते रहेः "क्या आप कुछ लेखन अभ्यास देंगी ताकि हमारी लिखावट सुधरे?" "क्या आप हमें वर्तनी के अभ्यास के लिए कुछ अतिरिक्त समय देंगी?" "हमें पढ़ाई करने के बेहतर तरीकों के बारे में बताइए ना?" ऐसे में क्या आश्चर्य कि वे काम शुरू करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।

बुधवार, 13 सितम्बर

चित्रकारी करते नन्हे बच्चों के साथ एण्ड्रयू को देखना मुझे सच में अच्छा लगता है। वह उनके हाथों पर लगे रंग के धब्बे पोंछता है और उन्हें कोमल, धीमे स्वर में अपने कपड़ों का ख्याल रखने को कहता है। वह उनके एप्रन (apron) बाँधता है और उतारने के बाद उन्हें तह करके रखना सिखाता है।

हेलेन और एलिस ने मेरी खूब मदद की है। वे नन्ही लड़कियों को सीना और सुई में खुद धागा पिरोना और गाँठ लगाना सिखा रही हैं। वर्ना तो एक नन्ही माँ ही बन गई है; वह पढ़ाती है, सलाह देती है और उनकी रक्षा करती है।

काउंटी पुस्तकालय के प्रभारी तब आए जब हम गा रहे थे। जब बड़े बच्चे अपनी किताबें चुनने लगे, हेलेन और मार्था ने नन्हों को व्यस्त रखने के लिए अन्ताक्षरी खिलवाई। बड़े बच्चे अपनी-अपनी किताबें चुनने के बाद कोई छायादार कोना खोज अपनी दुनिया में खो गए। यह पूरा दृश्य इतना शान्त व सौम्य था कि उसे छेड़ना मुझे अच्छा नहीं लगा, सो कला का पाठ मैंने मुल्तवी कर दिया।

शुक्रवार, 15 सितम्बर

चूँकि बच्चे आजकल ताज़ा घटनाओं में बेहद रुचि ले रहे हैं, मुझे लगा कि मुझे सामाजिक अध्ययन कक्षाओं में उन्हें यह सिखाना चाहिए कि जो कुछ वे पढ़ते या सुनते हैं उसका मूल्यांकन कैसे किया जाए। वे जो कुछ अखबारों में पढ़ते हैं या रेडियो पर सुनते हैं, उनमें उस सबको सच मान लेने की प्रवृत्ति है। आज काफी देर हमने पोलिश कॉरिडॉर (Polish Corridor) की समस्या पर बात की।

आज की बड़ी घटना थी सैंडबॉक्स यानी रेत का डिब्बा। लड़कों ने खेलघर के पास कल गड्ढा तैयार कर उसमें एक बड़ा खोखा लगा दिया था। आज उन्होंने उसमें वह रेत भर दी जो हम समुद्र तट के भ्रमण के समय लेते आए थे जब नन्हे बच्चे साथ नहीं जा सके थे। छोटे बच्चे बेसब्री से रेत में खेलने की अपनी बारी का इन्तज़ार करते रहे, क्योंकि सैंडबॉक्स इतना बड़ा नहीं है कि सब बच्चे एक साथ उसमें खेल सकें।

सोमवार, 18 सितम्बर

खेलघर का रंग आज पूरी तरह सूख चुका था। प्राथमिक बच्चों ने उसे सलीके

से सजाया और खुशी-खुशी खेले। जिस समय शारीरिक शिक्षा का पीरियड शुरू हुआ, उन्होंने अपने अलाव में "केक" पकने रख दिया था, और क्योंकि उसे जलने नहीं छोड़ा जा सकता था, नन्हे बच्चे वहीं खेलते रहे। अपने नाटकीय खेलों से उन्होंने बहुत कुछ सीखा है। उनका शब्द ज्ञान बढ़ा है, वे ज़्यादा आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बने हैं, और उनकी कल्पनाशीलता में इज़ाफा हुआ है। उन्हें झिझक की दीवारें बनाने का मौका ही नहीं मिला है। हमारे खेलघर का मूल्य उसकी वास्तविक लागत से कई गुना है। समूह की यूरोप की स्थिति में रुचि है। हम स्कूल प्रारम्भ होने से पहले हर दिन रेडियो पर खबरें सुनते हैं और तब दोपहर के घण्टे में सुने हुए पर चर्चा करते हैं।

मंगलवार, 19 सितम्बर

आदतें बनने में लम्बा समय लगता है और प्रतीत यह होता है कि वे पक्की हुई हैं या नहीं इसकी सुनिश्चितता कभी नहीं होती। हमें लगातार जाँचते रहना पड़ता है। छेड़छाड़ करने और समय बर्बाद करने की कुछ वृत्तियाँ नज़र आने लगी हैं। ये हद से आगे बढ़ें उससे पहले ही विशेषाधिकारों पर लगाम कसनी होगी। आज मज़ाक ही मज़ाक में पर्ल ने वर्ना का गणित का पन्ना फाड़ डाला जो वर्ना ने बड़ी सावधानी से सुन्दर अक्षरों में लिखा था। पर्ल ने सोचा कि वर्ना को अपना काम फिर से करते देखना एक बढ़िया मज़ाक था। यह ओछी वृत्ति पर्ल में कभी-कभार सिर उठाती रहती है।

आज हेलेन भी अपनी एक पुरानी आदत पर लौट आई। दूसरों के साथ हुए हादसों का उसने इतना सुख लिया कि सब घबरा उठे। दोपहर को खेल के दौरान थॉमस ने हेलेन की ओर गेंद फेंकी, पर वह उसे पकड़ न पाई। थॉमस हेलेन को चिढ़ाने से बाज़ नहीं आया। उसने कहा, "तुम तो खेल में उस्ताद हो, फिर क्यों नहीं पकड़ सकीं!" इस पर हेलेन ने गेंद पलटकर थॉमस की ओर कुछ यों फेंकी कि अगर वह झुका न होता तो उसे ज़ोर से लगती। थॉमस बिना नाराज़ हुए हँसा और बोला, "अरे भई, मार डालने की तो ज़रूरत नहीं है।" हेलेन यह बड़बड़ाती चली गई कि वह उसके दाँत तोड़ देगी। दूसरे बच्चों ने खेल जारी रखा और मुझे लगा कि बात खत्म हो गई है और सब झगड़ा भूल चुके हैं। पर दोपहर को जब मैं छोटे बच्चों के साथ काम कर रही थी और बड़े खुद बाहर पढ़ रहे थे तो हेलेन ने थॉमस से खूब झगड़ा किया। मुझे कुछ पता चलता इससे पहले ही वह

घर को निकल गई। किसी बच्चे ने बीच में हस्तक्षेप नहीं किया क्योंकि उनका कहना था, "अगर उसका मिज़ाज इतना गर्म है तो वह घर में ही ठीक है।" मैंने थॉमस को बुलाया और बाहर पढ़ाई करने का उसका विशेषाधिकार उस सप्ताह के लिए वापस ले लिया। शेष बच्चों का मिज़ाज अच्छा था। उन्होंने मुझे समूचे घटनाक्रम का सन्तुलित ब्यौरा दिया और उनके बयानों में साम्य था। बच्चों की राय थी कि "वे दोनों गर्म मिज़ाज के हैं और खूब शान बघारते हैं।" मामला कुछ हास्यास्पद-सा था, पर इससे अब तक के शान्त वातावरण का रिकॉर्ड गड़बड़ा गया।

हम लोग हर वर्ष क्रिसमस के समय विभिन्न देशों में क्रिसमस त्यौहार की नाट्य प्रस्तुति करते रहे हैं: जर्मनी, फ्रांस और इंग्लैण्ड। इस साल श्रीमती रैमसे ने वादा किया है कि वे हमें क्रिसमस की एक कथा के रूसी रूप को प्रस्तुत करने में मदद करेंगी। आज उन्होंने वह कथा मुझे सुनाई और वह सुन्दर है। उसे नाटक में रूपान्तरित करने से समूह के सभी बच्चों को उसमें भाग लेने का मौका मिलेगा, खासकर बड़े लड़कों को। कथा में नाटकीय गुण हैं, पृष्ठभूमि के लिए सुन्दर रूसी दृश्य बनाने के अवसर मिलेंगे और हम रूसी क्रिसमस संगीत को भी पिरो सकेंगे।

बुधवार, 20 सितम्बर

आज का दिन कल के विपरीत रहा। मैं जब छोटे बच्चों को प्रकृति अध्ययन के लिए घुमाने ले गई तो वॉरेन ने स्कूल की ज़िम्मेदारी सम्हाली। बच्चों ने कल की घटना के बावजूद मुझे उन पर भरोसा जताते देख राहत की साँस ली। हेलेन और थॉमस दोनों ने वादा किया कि वे स्वयं को काबू में रखेंगे।

भ्रमण के दौरान रिचर्ड को हरे रंग का एक झींगुर मिला। हमें उसे "बोलते" सुनने और उसके स्पर्शकों की गुदगुदी को महसूस करने में बड़ा मज़ा आया। रिचर्ड और क्लैरेंस, जो पहले बड़े बेजान से थे, अब काफी जीवन्त लगने लगे हैं। आइरीन और सैली के साथ खेलना उनके लिए अच्छा रहा है। फ्लोरेंस और रिचर्ड रास्ते भर समूह का ध्यान उन खूबसूरत वस्तुओं की ओर आकर्षित करते रहे जो उन्हें नज़र आईं – एक नन्हा मेपल वृक्ष, गद्दीदार और चमकीली हरी काई – और वे इन्हीं शब्दों में इनका वर्णन भी करते जा रहे थे। लौटकर हमने एक टेरेरियम (terrarium) बनाया, यानी ज़मीन पर उगने वाली वस्तुओं को

पारदर्शी काँच से बने जार में प्रदर्शित किया। उसे सील बन्द करते ही बच्चों ने जानना चाहा कि उसे कैसे सींचेंगे। मैंने कहा कि हम कल तक रुकेंगे और शायद तब वे खुद ही मुझे बता सकेंगे। पर हमें ज़्यादा देर रुकना ही नहीं पड़ा। दोपहर को जार के ऊपरी भाग में ओस की जमावट नज़र आने लगी। रिचर्ड बोला, "मुझे पता चल गया। अन्दर खुद ब खुद पानी बरसेगा।"

कहानी कहने के पीरियड में छोटे बच्चों के बीच जाकर मैंने घोषणा की, "मुझे एक कहानी पता है।" वे सब चीखे, "तो हमें सुनाइए।" सो मैंने उन्हें "चूहा और सॉसेज" (चूहा और कबाब) कहानी सुनाई। कहानी खत्म होने पर मैंने पूछा, "अब बताओ कि कौन-कौन कहानी जानता है?" सैली ने "तीन सूअर" कहानी खूब रस लेते हुए सुनाई और नन्हे श्रोताओं को बाँधे रखा। फ्लोरेंस ने भी "शेर और चूहा" वाली कथा बखूबी सुनाई। आइरीन ने रूसी लोक कथाओं वाली पुस्तक में पढ़ी एक रूसी कहानी सुनाई। इन बच्चों ने कहानी कहना बखूबी सीख लिया है।

गुरुवार, 21 सितम्बर

आज तीन बजे काम बन्द कर हमने राष्ट्रपति रूज़वेल्ट को अमरीकी कांग्रेस के समक्ष "प्रतिरोध कानून" (Embargo Act) पर वक्तव्य देते सुना। मुझे आशंका थी कि शायद भाषण बच्चों को बेहद कठिन लगे, पर वे ध्यान से सुनते रहे। डेनियल मेज़ पर रखी अपनी चीज़ों से खेलता रहा और एल्बर्ट ने फुसफुसाकर कुछ दूसरा करने की अनुमति चाही क्योंकि उसे भाषण समझ नहीं आ रहा था। वॉरेन और हेलेन छुट्टी के बाद भी बैठे रहे ताकि पूरा भाषण सुन सकें। नन्हों ने खेलघर में खेलने की अपनी-अपनी कहानियाँ पूरी कर डालीं। प्राथमिक समूह के बड़े बच्चे बड़ी अच्छी मौलिक कहानियाँ लिखते हैं। एरिक को अब भी कुछ दिक्कत होती है। आइरीन, एलिज़ाबेथ और फ्लोरेंस नौ-दस वाक्यों की कहानियाँ लिखती हैं।

शुक्रवार, 29 सितम्बर

यह व्यस्त और फलदायी माह रहा है। मैं सभी बच्चों के घर जा सकी हूँ और अभ्यास के पीरियड में प्रत्येक बड़े बच्चे से व्यक्तिगत बातचीत कर पाई हूँ। बच्चों और उनके माता-पिता की सहयोग की वृत्ति पर मैंने खास तौर से गौर

किया है। बच्चों ने अपनी कॉपियों के विभिन्न भागों को छोटे-छोटे टैब लगाकर अलग-अलग दर्शाया है। फिलहाल उनकी कॉपियों में निम्नोक्त भाग हैं:

1. जो काम मुझे करने हैं
2. मेरी खास आवश्यकताएँ
   (क) लेखन में मेरी गलतियाँ
   (ख) बोलने में मेरी गलतियाँ
   (ग) मेरी वर्तनी की भूलें
   (घ) मेरी गणित सम्बन्धी समस्याएँ
   (च) मेरी पठन सम्बन्धी समस्याएँ
   (छ) मुझे जो स्वस्थ आदतें डालनी चाहिए
   (ज) स्वास्थ्य सम्बन्धी जिन कमियों को मुझे सुधारना है
   (झ) सफाई की दैनिक जाँच सूची
   (ट) मैं इस वर्ष अपने आप में कैसे सुधार लाना चाहती/चाहता हूँ
3. मेरी खास उपलब्धियाँ
   (क) मैंने जो पुस्तकें पढ़ीं
   (ख) कविताएँ जो मुझे पसन्द हैं
   (ग) मैंने जो कविताएँ और कहानियाँ लिखीं
   (घ) मैंने जो रपटें बनाई हैं
   (च) जिन समितियों में मैंने सेवाएँ दीं
   (छ) जिन पदों पर मैं रही/रहा
   (ज) मैंने जो चीज़ें बनाईं
   (झ) जो काम मैं खुद कर पाई/पाया
   (ट) मैं जो करना चाहती/चाहता हूँ
4. सामाजिक अध्ययन
5. विज्ञान
6. स्वास्थ्य
7. ताज़ा घटनाएँ
8. 4-एच क्लब के काम

हर नया वर्ष हमें जीवन जीने की एक अधिक ऊँची पायदान पर ले जाता है। इस वर्ष आए मेहमानों ने शाला कक्ष और बच्चों की साफ-सफाई पर टिप्पणियाँ कीं। बच्चों में एक-दूसरे के प्रति और अपने परिवारों के प्रति सम्मान की भावना बढ़ी है। थॉमस और उसकी सौतेली माँ के बीच रिश्ते सुधरे हैं। हेलेन की बहनों को उसकी खूबियाँ नज़र आने लगी हैं। शायद हेलेन अब खुद भी यह सीख ले कि हर बार अपनी बात को बलपूर्वक रेखांकित करने की ज़रूरत नहीं है। बच्चों में सफाई जैसे कामों को आपस में बाँट लेने की तथा स्वशासन को चलाने के लिए आपसी तालमेल व समझौते करने की वृत्ति नज़र आती है। साथ ही उनमें मूल्यों के प्रति सम्मान भी जग रहा है, जिसे हमारे समूह के गरीब बच्चों के प्रति उनके नज़रिए में साफ देखा जा सकता है। उनके काम का स्तर पहले से बहुत ऊँचा उठा है।

बच्चों को लोक कथाओं, गीत-संगीत व नृत्य को सीखने-जानने के तमाम अवसर मिले हैं, जो प्रत्येक बच्चे की विरासत का हिस्सा होते हैं। उन्हें कहानियाँ सुनाने और उन्हें नाटकों के रूप में प्रस्तुत करने के अवसर मिले हैं जिससे उनकी झिझक खुली है और भाषा पर उनकी पकड़ गहराई है। चित्रकला, मिट्टी से खिलौने बनाना, स्केच बनाना और कविताएँ-कहानियाँ लिखना उनकी अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम बने। उनका लेखन ईमानदार बना है और अब वे जो जानते या महसूस करते हैं उसे बखूबी लिख सकते हैं। दूसरों के लेखन में उनकी रुचि लगातार बढ़ी है। हमें अपना पुस्तकालय का पीरियड अच्छा लगता है जिसमें हम एक-दूसरे को उन किताबों के बारे में अनौपचारिक तरीके से बताते हैं जिन्हें हम उस वक्त पढ़ रहे होते हैं। बच्चे पुस्तकों को चुनने में उच्च कोटि की अभिरुचि दर्शा रहे हैं। इस पर लाइब्रेरियन ने भी टिप्पणी की थी। पिछली बार वे यहाँ आई थीं।

दुनिया और हमारे साथ उसके रिश्ते में उनकी रुचि बढ़ रही है।

इस माह हमने समस्याओं का भी सामना किया। मैंने उन्हें एक नई दृष्टि से देखना सीखा है। मैंने बच्चों के साथ ये जितने भी वर्ष बिताए हैं, मैंने पाया है कि हमेशा नई-नई समस्याएँ सिर उठाती रहती हैं और लगता है ऐसी समस्याएँ हमेशा ही तब तक आती रहेंगी जब तक लोग साथ-साथ रहेंगे। हमें इन समस्याओं से परेशान नहीं होना चाहिए, उन्हें असुविधाजनक नहीं मानना

चाहिए, बल्कि उनका सामना कर उनके समाधान तलाशने चाहिए। इस दृष्टिकोण को अपनाने पर हम बच्चों को टोकना, उन्हें दोष देना बन्द कर देंगे और उनके साथ मिलजुलकर समस्या का मूल कारण तलाशेंगे और समाधान की दिशा में काम करेंगे। बच्चे भी इस बीच यह पहचानने लगे हैं कि जब कभी मुझे प्रत्यक्ष नियंत्रण करना होता है तो मैं ऐसा सिर्फ अपनी सत्ता या धौंस जमाने के लिए नहीं करती, बल्कि समूचे समूह के हित में करती हूँ, और वे भी मेरे साथ सहयोग करते हैं।

सोमवार, 2 अक्तूबर

आज दोपहर राजकीय कृषि प्रयोग स्टेशन के उद्यान विशेषज्ञ श्री निसले माता-पिताओं, कुछ नौजवानों और स्कूली बच्चों को सब्ज़ियों के भण्डारण के बारे में बताने आए। इस नमी भरे दिन हम हिल परिवार के घर उनके अलाव के सामने घण्टे भर से भी ज़्यादा बैठे और सब्ज़ियों को रसोई घर या तहखाने (cellar) में खोखों व पीपों में सहेजकर रखने के गुर सीखते रहे। इसके बाद हम बाहर गए और श्री निसले ने खुले गड्ढे के लिए एक सही कोना चुना और हमें समझाया कि उसे कैसे खोदा जाए ताकि सर्दी भर उसमें सब्ज़ियाँ ताज़ा रहें। कोल परिवार, मैथ्यू परिवार और मान परिवार हाल ही में शहर से आकर खेती करने लगे हैं, सो उन्होंने सीखने की उत्सुकता में कई सवाल पूछे। बच्चों ने भी प्रश्न पूछे और चर्चा में योगदान किया। बच्चों और वयस्कों के उत्सुक-जिज्ञासु चेहरे देख, उन्हें साथ-साथ सीखता देख मुझे बेहद रोमांच हुआ। एक ऐसे समूह का हिस्सा बनना मुझे सच में अच्छा लगा जो अपने सदस्यों के बेहतर जीवन की योजना बनाने की दिशा में एक छोटी-सी पहल कर रहा था।

गुरुवार, 5 अक्तूबर

आज सुबह जब मैं छोटे बच्चों को प्रकृति अध्ययन के वास्ते बाहर ले गई तो बड़े बच्चों ने चालीस मिनट तक स्वयं काम किया। जब शारीरिक शिक्षा के पीरियड का समय आया तो एण्ड्रयू ने, जो अध्यक्ष है, कुछ समय खेल योजना बनाने में समूह की मदद की। इस बीच कुछ बच्चे अपने लंच में से फल निकाल उन्हें खाते रहे। तब एण्ड्रयू ने उन्हें खेलने की छूट दी और स्वयं खेल की निगहबानी की, और खेल समय खत्म होने पर सबको काम करने वापस ले

आया। इस बीच मिस एवरेट आ पहुँचीं। एण्ड्रयू ने उन्हें हमारे अखबार का ताज़ा अंक पढ़ने को पकड़ाया और उन्हें कहा कि वे आराम से बैठें और कि मैं कुछ ही देर में लौट आऊँगी। अखबार की आड़ से मिस एवरेट कक्षा में चल रही गतिविधियाँ देखती रहीं। हमारी भरसक कोशिशों के बावजूद जब भी गड़बड़ होती है तो उसके लिए मैं और मिस एवरेट एक जुमले का प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं, "लोकतंत्र खड़खड़ाया।" लौटने पर मुझे अपनी मेज़ पर उनकी लिखी एक पंक्ति मिली। लिखा था, "आज लोकतंत्र नहीं खड़खड़ाया!"

लोकतांत्रिक नियंत्रण केवल उसी स्थिति में आ सकता है जिसमें बच्चों को अपनी समस्याओं के समाधान स्वयं खोजने की आज़ादी हो। बाह्य कृत्यों को करने की आज़ादी से इसमें मदद मिली है, पर मैंने बड़ी मेहनत से यह कोशिश भी की है कि इस आज़ादी को अपने आप में एक लक्ष्य न बनने दिया जाए क्योंकि तब यह आज़ादी नहीं रहती बल्कि व्यक्तिगत मनमर्ज़ी की गुलामी में तब्दील हो जाती है। पर जिस तरह का स्वानुशासन ये बच्चे दर्शा रहे हैं, उसने उन्हें बढ़ने, विकसित होने के लिए आज़ाद कर दिया है।

लोकतंत्र दूसरे अर्थों में भी नहीं खड़खड़ा रहा। इस साल बच्चे अपनी क्लब बैठकें पूरी तरह खुद संचालित कर रहे हैं। पिछले सालों के दौरान मुझे हमेशा सचिव को याद दिलाना पड़ता था कि वह बैठक की गतिविधि को लिख डाले। अब समूह के दबाव के कारण ये सूचनाएँ नियमित रूप से दर्ज कर दी जाती हैं। आज की बैठक में चर्चा के वास्ते कई मसले थे। अपने कोष का हिसाब-किताब देख लेने के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि नए पर्दे खरीदने से पहले वे कुछ समय इन्तज़ार करेंगे। उन्होंने दोपहर के खेल की चर्चा भी की और तय किया कि खेल के दौरान जो कोई दूसरों का मज़ा खराब करे उसे समूह से निकलने को कहा जाना चाहिए। अगर वह बाहर निकलने से इन्कार कर दे या दूसरों को सताता रहे तो कुछ बच्चों की समिति सलाह के लिए मेरे पास आएगी। बैठक के अन्त में किसी को याद आया कि नए खेलों और नई टीमों का चयन अब तक नहीं हुआ है। यह रोचक था। पिछले सालों में नई टीमें और नए खेल चुनना ही सबसे महत्वपूर्ण मसला हुआ करता था जिसे सबसे पहले उठाया जाता था। तब दूसरे मुद्दों को घसीटकर लाया जाता था, अक्सर सिर्फ इसलिए ताकि चर्चा करने के लिए कोई मसला हो। क्रमशः बच्चे उन मसलों पर

बात करने लगे हैं जिनके बारे में वे सच में कुछ करना चाहते हैं। और अब हाल यह है कि वे महत्वपूर्ण मसलों पर पहले बात करते हैं और सामान्य मसलों को अन्त के लिए छोड़ देते हैं।

घर लौटते समय मैं इस सब पर सोचती रही। आजकल लोकतंत्र संरक्षण पर बड़ी बातें सुनाई पड़ती हैं। इसका मतलब क्या है और हम इस दिशा में क्या और कैसे कर सकते हैं? मुझे लगता है कि लोकतंत्र के फायदे और उसकी ज़िम्मेदारियों के प्रति पूर्णतः सचेत होना हो, उसकी चाहत जगानी हो, तो बच्चों को शाला में लोकतांत्रिक जीवन जीने का अभ्यास करने देना होगा। पर सिर्फ इतना करना भर काफी नहीं होगा। क्योंकि शाला का जीवन समूचे जीवन का केवल एक हिस्सा मात्र है, सो हमें समुदाय के लोकतांत्रिक जीवन में भी उन्हें उस स्तर की हिस्सेदारी करने देनी होगी जितनी बच्चों की परिपक्वता हो। परन्तु अगर हम केवल उपरोक्त दो अभ्यास ही करते रहे तो हम लोकतंत्र की संकीर्ण समझ तक ही पहुँच सकेंगे। आज हम एक परस्पर निर्भर दुनिया में जी रहे हैं जिसमें यह निर्भरता बढ़ती जा रही है। अतः बच्चों को स्वयं को इस दुनिया में अपने स्थान व काल के सन्दर्भ में समझना होगा।

इस निष्कर्ष के सन्दर्भ में जब मैं पिछले तीन सालों के अपने अनुभव को देखती हूँ तो लगता है कि एक क्षेत्र बच्चों के अनुभव से छूट रहा है। उनके मानस में विभिन्न युगों में मानव के क्रमिक विकास की कोई संयोजित छवि नहीं है। उन्हें अपने आपको देश व काल में अभिमुख करना ज़रूरी है।

स्कूल के प्रारम्भिक सप्ताहों में सामाजिक अध्ययन के पीरियड का उपयोग कक्षा को ठीक-ठाक करने में लगाना मुझे एक अच्छी नीति लगती है। इससे हमें जमने का समय मिलता है और सत्र के प्रारम्भ में आने वाली कठिनाइयों को भी हम दूर कर पाते हैं। साथ ही मुझे बच्चों, उनकी रुचियों व उनकी आवश्यकताओं का और अध्ययन करने का अवसर भी मिल जाता है। सामाजिक अध्ययन तथा इसी तरह अन्य विषयों के दौरान हम शाला में जो कुछ करें, उसे उन समस्याओं से उपजना चाहिए जो बच्चों के रोज़मर्रा के जीवन के अनुभवों से निकलती हों। इस साल इनकी रुचि काफी हद तक युद्ध में है। हम इतिहास में पीछे जाकर इसके कुछ पक्षों को समझने की चेष्टा करते रहे हैं, ठीक उसी तरह जैसे हम ताज़ा घटनाओं को समझने के लिए हमेशा इतिहास का उपयोग करते रहे हैं।

उनके सवालों को सुनते समय मुझे लगता है कि मुझे उन प्रश्नों पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए जो हमें अतीत में ले जाएँ ताकि बच्चे स्वयं को काल में अभिमुख कर सकें।

सोमवार, 16 अक्तूबर

आज नन्हे बच्चे पतझड़ का अध्ययन करने सैर पर निकले। हम सड़क पर मुड़े ही थे कि वे कहने लगे कि सूरज की किरणें पत्तों को कैसे सुन्दर ढंग से चमका देती हैं, और यह भी कि सूरज पत्तों का "खनन" करता है। रिचर्ड ने पूछा, "आखिर पत्तियाँ पेड़ से अलग क्यों हो जाती हैं?" हम सड़क के किनारे बैठ गए और मैंने बच्चों को समझाने की कोशिश की कि पेड़ सर्दियों की तैयारी किस प्रकार करते हैं। हमने टहनियों को गौर से देखा, और हमने देखा कि पत्तों के झड़ने से बने ज़ख्म अपने आप ठीक हो जाते हैं। सभी बच्चों ने कई ऐसे पेड़ों को पहचानना सीखा जिनसे वे पहले अपरिचित थे। इन बच्चों को चीज़ों को सूँघना पसन्द है। उन्होंने भूर्ज और सैसाफरैस की जड़ों को सूँघा और उन्हें इनकी गन्ध इतनी अच्छी लगी कि वे जो कुछ भी नज़र आया उसे ही सूँघने लगे। जब भी वे सैर पर निकलते हैं तो अपनी सभी इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। उनका ध्यान वैसे तो पेड़ों पर था पर उनकी नज़र बीजों पर भी पड़ रही थी। शुक्रवार को जब हम अपनी प्रकृति अध्ययन की कहानियों की कॉपियों को तैयार कर रहे थे तो लगा था कि वे लगभग तैयार हैं। आज सैर से लौटने के बाद बच्चों को लगा कि उन्हें एक पन्ना रंगीन पत्तियों पर भी जोड़ना चाहिए। आर्थर बोला, "मेरी कहानी का शीर्षक होगा, 'ये हैं कुछ सुन्दर पत्तियाँ'।" उसने मुझसे कहा कि मैं शीर्षक को बोर्ड पर लिख दूँ ताकि वह उसे लिखने का अभ्यास कर सके। इन बच्चों को लिखना सीखना ज़रा भी कठिन नहीं लगता। लिखने के पीछे उनका एक ठोस मकसद जो है।

मंगलवार, 17 अक्तूबर

इस सप्ताह के *करेन्ट इवेन्ट्स* के अंक में एक लेख था, "हमारी आज़ाद प्रेस ने जन्मदिन मनाया।" अपनी चर्चा में हम लेख से भटक गए क्योंकि कई रोचक सवाल उठ खड़े हुए:

1. अमरीका में पहली आज़ाद प्रेस कैसे और कब स्थापित हुई?

2. पादरी ग्लोवर की प्रेस अमरीका में सेंसरशिप से क्यों नहीं बच सकी?
3. प्रेस को आज़ादी कैसे मिली?

हमने सेंसरशिप के अर्थ और मौजूदा युद्ध में उसके स्थान पर बात की। थॉमस ने सबको आगाह किया कि शेष सब सच भी हो पर कुछ बातें छोड़ दी जाएँ, तो भी वास्तविकता की एक भ्रामक छवि रची जा सकती है। तीसरे सवाल पर बातचीत करते समय हमने जाना कि संविधान के पहले संशोधन की घोषणा द्वारा प्रेस को आज़ादी मिली। कई दूसरे सवाल भी उठे। हमें संविधान की ज़रूरत क्यों पड़ी? 1791 से पहले हमारा संविधान क्यों नहीं था? क्रान्ति युद्ध से अमरीका को आज़ादी कैसे मिली? अमरीका जैसा छोटा-सा देश इंग्लैण्ड जैसे विशाल व सशक्त साम्राज्य के खिलाफ लड़ाई कैसे जीत सका?

आज एण्ड्रयू हमें छोड़ गया। उसके पिता ने अन्ततः वह खेत खरीद लिया जिसके लिए उन्होंने इतनी मशक्कत की थी। समूह को अपने अध्यक्ष को खोने का दुख था और मैं उस घुँघराले बालों वाले लड़के को खोने को लेकर तरह-तरह से अफसोस महसूस कर रही थी। उसे हमारे जैसे स्कूल में ही होना चाहिए जहाँ जिस तरह की योग्यता उसमें है उसकी कद्र हो।

इस वर्ष मैं बच्चों को काउंटी पुस्तकालय से वाकिफ करवाना चाहती हूँ। आज स्कूल के बाद मैं प्रथम समूह के बच्चों को काउंटी मुख्यालय ले गई ताकि वे शेष बच्चों के लिए किताबें ला सकें। फ्लोरेंस, एलिज़ाबेथ, एलिस और मे को किताबों के संग बड़ा अच्छा लगा। उनकी टिप्पणियाँ थीं, "एल्बर्ट को यह अच्छी लगेगी।" "नन्हों के लिए यह चित्रों वाली किताब सही होगी।" "इस किताब के शब्द एलेक्स के लिए पढ़ना आसान होंगे।" "बड़े बच्चे इस पुस्तक से संविधान के बारे में पढ़ सकेंगे।"

लौटते समय सूरज ढल चला था। बादलों का रंग लगातार बदल रहा था और पहाड़ बारी-बारी लाल व बैंजनी नज़र आने लगे थे। हमने इस नज़ारे के शब्द-चित्र बनाए। हम सबका समय खूब अच्छा गुज़रा! बच्चों की बातें मानो उफन रही थीं, जबकि साल भर पहले तक यही समूह बिल्कुल मौन रहता। थॉमस आज मदद करने की भावना से ओत-प्रोत था। उसका अहम् सच में बुलन्द है। आजकल वह हरेक चीज़ को अपने से ज़ोड़कर ही सोचता है। उसकी अपनी

ताज़ा छवि "पूरी तरह लापरवाह" किस्म की है, सो वह अपने बालों को कंघी तक नहीं करता। मुझे ये बातें तभी पता चलती हैं जब वह मदद करने वाले मूड में होता है, क्योंकि तब वह बातचीत करता है, अमूमन खुद के बारे में। इस सबके बावजूद उसकी हर नई मुद्रा के पीछे छिपे एक संवेदनशील और बुद्धिमान लड़के की झलक आप देख सकते हैं जिसका चेहरा सुन्दर है और जो वाकपटु है। आप उसे पसन्द करने पर मजबूर होते हैं।

बुधवार, 18 अक्तूबर

हमने सेंसरशिप पर कल वाली चर्चा जारी रखी। *करेन्ट इवेन्ट्स* में एक फ्रांसीसी अखबार का चित्र छपा है जिसके पृष्ठ पर एक हिस्सा काला किया हुआ है। इस काले स्थान पर लिखा हुआ है "सेंसर"। मैंने बच्चों से सवाल किया कि क्या उन्होंने कभी कोई अमरीकी अखबार देखा है जिसमें इस तरह के खाली स्थान हों? किसी बच्चे ने ऐसा अखबार कभी नहीं देखा था। "क्या इसका मतलब यह है कि हमारे अखबार सब कुछ छापते हैं?" मैंने पूछा। यों हम एक बार फिर "प्रापेगैण्डा" और "तथ्य" व "राय" में अन्तर पर बातचीत करने लगे। वॉरेन ने इस चर्चा में काफी योगदान किया। उसने सम्पादकीयों के बारे में बताया। उसने बताया कि अगर विभिन्न विषयों पर किसी अखबार का नज़रिया जानना हो तो सम्पादकीय पढ़े जा सकते हैं और उनके सन्दर्भ में लेखों को आँका जा सकता है। मैंने बच्चों से पूछा कि उनके घरों में कौन-कौन से अखबार आते हैं और वे उन्हें कैसे पढ़ते हैं। हमें पता चला कि:

8 परिवारों के पास सप्ताह में एक बार न्यू यॉर्क का *डेली न्यूज़* आता है।
1 परिवार के पास इतवार को *न्यू यॉर्क अमेरिकन* आता है।
2 परिवार इतवार को *न्यू यॉर्क टाइम्स* मँगवाते हैं।
2 परिवार इतवार को *न्यू यॉर्क हैराल्ड ट्रिब्यून* लेते हैं।
1 परिवार के पास *नेवार्क सण्डे कॉल* आता है।
सभी परिवार स्थानीय साप्ताहिक अखबार भी लेते हैं।

वॉरेन सबसे पहले मुखपृष्ठ की सुर्खियाँ और दाहिनी ओर छपने वाला स्तम्भ देखता है। एडवर्ड भी पहले सुर्खियाँ देखता है। एल्बर्ट सबसे पहले "हँसी-मज़ाक" वाली चीज़ें पढ़ता है और तब मुखपृष्ठ की खबरें पढ़ता है। समूह में

दस बच्चे सबसे पहले "हँसी-मज़ाक" पढ़ते हैं। पाँच बच्चे सिर्फ कार्टून पढ़ते हैं और यदि स्कूल के लिए अखबार से कुछ देखना-पढ़ना ज़रूरी ना हो तो और कुछ भी नहीं पढ़ते।

क्योंकि अब हमारा अध्ययन महत्वपूर्ण दिशा में बढ़ चला है, हमने दो सचिव चुने जो हमारी चर्चाओं को दर्ज कर सकें। वे दो अलग-अलग कॉपियों में नोट लिखेंगे ताकि भविष्य में उनसे मदद ली जा सके। हर दिन दो नए बच्चे सचिव की भूमिका निभाएँगे।

गुरुवार, 19 अक्तूबर

आज मैं सात अलग-अलग अखबार स्कूल में लाई, जो सब बुधवार, 18 अक्तूबर के थे। हमने बोर्ड पर एक सूची बनाई जिसमें यह दर्ज किया गया कि किस अखबार ने किस खबर को सबसे अधिक महत्व दिया था, और जल्दी ही साफ हो गया कि सबसे महत्वपूर्ण क्या है इस पर अखबारों में सहमति नहीं थी, न ही तथ्यों पर उनमें कोई सहमति थी। एल्बर्ट ने पूछा, "हर अखबार में तथ्य अलग-अलग क्यों हैं?" सचिवों ने सवाल दर्ज कर लिया क्योंकि इसका जवाब हम अब तक तलाश नहीं सके थे। बच्चों ने इस बात पर भी गौर किया कि सबसे महत्वपूर्ण खबर को दाहिनी ओर के स्तम्भ में छापा जाता है।

शुक्रवार, 20 अक्तूबर

जब हम महत्व के तौर पर दूसरी बड़ी खबरों की सूची बना चुके तो बच्चों ने कुछ बातों पर गौर किया। कौन सी खबर सबसे महत्वपूर्ण है इस पर अखबार सहमत नहीं होते हैं। एक अखबार में जिस खबर को सबसे महत्वपूर्ण बताया गया हो वह किसी दूसरे अखबार में दूसरा स्थान भी पा सकती है। स्थानीय खबरें महत्वपूर्ण होती हैं। युद्ध, जो समूची दुनिया को प्रभावित करता है, स्थानीय खबरों से भी अधिक महत्वपूर्ण है। सभी अखबारों में युद्ध से जुड़ी खबरों को सबसे ज़्यादा महत्व दिया गया था, परन्तु न्यू यॉर्क के दो अखबारों व फिलेडेल्फिया के अखबारों में स्थानीय खबरों को दूसरा स्थान मिला था। थॉमस ने टिप्पणी की, "लगी शर्त, अगर युद्ध न हो रहा होता तो ये अखबार स्थानीय खबरों को ही सबसे महत्वपूर्ण स्थान देते, क्योंकि अधिकांश लोगों की रुचि उसी जगह में होती है जहाँ वे रहते हों।"

रिचर्ड हमारे अजायबघर के लिए ईंट भट्टे से तीन ईंटें लाया है। उनमें से एक गीली मिट्टी की थी, दूसरी धूप में सुखाई हुई, और तीसरी जो पकाई गई थी। कल वह एक छोटा जंगली चूहा लाया था और उसने अपना सारा खाली वक्त उसके लिए एक पिंजरा बनाने में लगाया। स्कूल खत्म होने पर वह चूहे व पिंजरे को अपनी बाँह के नीचे दाब, सम्हालकर घर लेता गया ताकि शनि व इतवार को उसका ख्याल रख सके। छोटे बच्चों की अजायबघर में खूब रुचि है क्योंकि उनका अपना एक कोना है। वे काफी समय वहाँ चीज़ों को देखते बिताते हैं। काँच की शीशी में रखी स्टील की कतरनें और चुम्बक उन्हें मोहते हैं। फ्लोरेंस और क्लैरेंस ने आज चुम्बक को कमरे की हरेक वस्तु पर लगाकर देखा, अपने बालों पर भी। आर्थर दस मिनट तक चर्खे के बड़े पहिए को घुमाता रहा, और छोटे पहिए को घूमते हुए देखता रहा। बड़े लड़कों ने पिछले साल ही इसे बनाया था। तब उसने विस्तार से मुझे बताया कि वह काम कैसे करता है, मानो उसी ने चर्खे का आविष्कार किया हो।

आज थॉमस मेरे पास आया और बोला, "मिस वेबर, क्या आप हमारी क्लब बैठक में हमारे साथ बैठेंगी? हमें कुछ सलाह चाहिए।" बच्चे अध्यक्ष और सचिव के इर्द-गिर्द एक अनौपचारिक घेरे में बैठे थे। वॉरेन मेरे लिए एक कुर्सी लाया, उसने शिष्टता से मुझे बैठने को कहा और तब बड़ी कामकाजी शैली में समझाया कि वे एक हैलोईन (Halloween) पार्टी करना चाहते हैं जिसकी योजना बनाने में वे मेरी मदद चाहते थे। कार्यक्रम और नाश्ते की समितियाँ वे बना चुके थे। इन समितियों के अध्यक्ष के रूप में हेलेन व मार्था बैठक के बाद मेरे पास आईं और बोलीं कि मैं सोमवार को दोपहर का खाना उनके साथ खाऊँ और योजना बनाने में उनकी मदद करूँ। बच्चों को दोपहर के खाने के दौरान मीटिंग करना बेहद पसन्द आता है। इससे उन्हें लगता है मानो वे वयस्क और व्यवहार-कुशल हैं।

सोमवार, 23 अक्तूबर

आज सुबह स्कूल जाते समय मैं धरती की खूबसूरती से डर-सी गई। पहाड़ पार करने पर मैंने पाया कि छोटी-सी यह वादी प्रकाश और रंगों में डूबी है। आकाश भारी और काला और अशान्त था। आकाश की छाया दूर पहाड़ों पर पड़ रही थी और वे गहरे नीले दिख रहे थे। घाटी पर पड़ने वाली रोशनी मेरे पीछे से फूट-

फूटकर पड़ रही थी। मैं यह अनुभव बच्चों के साथ बाँटना चाहती थी। मैंने जो कुछ देखा था वह बच्चों को बताया और सुझाया कि हम सब टहलने जाएँ और साथ-साथ दृश्य का आनन्द लें। आज के लिए जो कार्यक्रम तय था उस पर चलना गुस्ताखी होती क्योंकि बाहर देखने-सीखने को इतना कुछ था, जो शायद सिर्फ आज ही तक रहने वाला था। चलते-चलते हम उस सब चीज़ों के बारे में बातें करते रहे जो हमें दिख रही थीं, दूर पहाड़ों के रंगों के बारे में, उन पर पड़ती बादलों की छाया के बारे में, सर्दियों में उगने वाले गेहूँ और जौ के चमकदार हरे खेतों के बारे में, आकाश में नज़र आ रहे नीले, स्लेटी और सफेद रंगों के अनन्त रूपों के बारे में, विभिन्न पेड़ों के रंगों के बारे में, इस मौसम में पेड़ों में नज़र आते खुलेपन के बारे में, झरनों के गहरे रंगों के बारे में। आर्थर कुछ देर मेरे साथ चल रहा था और एकटक आगे की ओर देख रहा था। "तुम देख क्या रहे हो, आर्थर?" मैंने पूछा। "आप ठीक ही कह रही थीं, मिस वेबर," उसने जवाब दिया, "पहाड़ सच में नीले हैं।"

लौटने पर हम दसेक मिनट सिर्फ बतियाते रहे। बातचीत आनन्दायक और ताज़गी भरी थी। वॉरेन उन कुछ चीज़ों की ओर ध्यान बँटाना चाहता था जो हमने देखी थीं। क्योंकि कई बच्चे ठीक यही करना चाहते थे, हमने सुबह का नियमित कार्यक्रम ताक पर रख दिया। हेलेन और मार्था ने चित्रकारी नहीं की। इसकी बजाय, सैर के समय जो कुछ रेखाचित्र उन्होंने बनाए थे उन्हें ही पूरा किया। मैं बच्चों को ठीक यही करने को प्रोत्साहित करती रही हूँ।

मंगलवार, 24 अक्तूबर

बच्चों ने कल जो कुछ देखा था उस पर कुछ बेहद सुन्दर कविताएँ उन्होंने लिखीं। उनमें जो सबसे अच्छी हैं वे हमारे अखबार में छपेंगी। बच्चे आजकल इतना कुछ लिखते हैं कि हम उसमें से चुनकर अपना स्तर बढ़ा सकते हैं।

बच्चों को अपने द्वारा रचे एक गीत की हैक्टोग्राफ की गई प्रतियाँ इतनी अच्छी लगीं कि अब वे और गीत रचना चाहते हैं और उन्हें एक पुस्तिका में संकलित कर क्रिसमस पर अपनी माताओं को भेंट करना चाहते हैं। आइरीन, एलिज़ाबेथ, फ्लोरेंस और सैली भी जिन कविताओं को याद कर रही हैं उनका एक संकलन अपनी माँओं के लिए बनाना चाहती हैं और उन्हें चित्रित करना चाहती हैं। नन्हों के कहानी वाले पीरियड में मैंने उन्हें "विवेकवान हान्स" और "बूबी" की

कहानियाँ सुनाईं। मेरी कहानी खत्म करने पर उन्होंने जानना चाहा कि "विवेकवान" का मतलब क्या होता है। जब मैंने अर्थ बताया तो सैली हँसकर बोली, "बूबी बड़ा समझदार था और विवेकवान हान्स कतई विवेकवान नहीं था।" सात वर्षीय सैली ने इन कहानियों में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को बखूबी पकड़ लिया था!

गुरुवार, 2 नवम्बर

बड़े बच्चे अखबारों के अध्ययन पर लौटकर खुश हुए। हमने मुख्य रास्ते को छोड़कर कई रोज़ यह जानने में लगाए कि विश्व युद्ध में जर्मनी ने क्या खोया और हिटलर जैसा कोई इन्सान जर्मन लोगों को क्योंकर आकर्षित कर सका। आज हमने अखबार देखे और उनमें सम्पादकीय तलाशे। बच्चों ने मुझे बताया कि किन अखबारों ने किन-किन विषयों पर सम्पादकीय छापे थे और मैंने बोर्ड पर उनकी सूची बनाई। तब हरेक बच्चे ने एक-एक सम्पादकीय और एक खबर चुनी ताकि वे उनकी तुलना करें और उनमें अन्तर तलाश सकें।

सोमवार, 6 नवम्बर

कल बच्चों को अखबार की सामग्री पढ़ने में इतनी परेशानी हुई थी कि मैंने तय किया कि मैं ही उन्हें पढ़कर सुना दूँ। क्योंकि मकसद तो यही है कि वे एक सम्पादकीय और एक लेख में अन्तर समझ सकें। पर अगर पठन सामग्री बेहद कठिन हो तो वे अपना उद्देश्य ही भूल सकते हैं। मैंने *न्यू यॉर्क टाइम्स* में रूस व तुर्की के बीच असफल रही प्रस्तावित सन्धि के बारे में छपे लेख को पढ़ा। तब मैंने उसी विषय पर सम्पादकीय को भी पढ़ा और दोनों की तर्ज़ में अन्तर साफ दिखाई देने लगा।

मंगलवार, 7 नवम्बर

मैंने *ईस्टन एक्सप्रेस* में रक्तदान करने वालों के बारे में एक लेख पढ़ा और तब इसी विषय पर लिखा सम्पादकीय भी पढ़ा और बच्चों ने तत्काल उनमें अन्तर को पकड़ लिया। वॉरेन को लगा कि स्कापा फ्लो (Scapa Flow) की घटना पर सभी अखबारों में छपी खबर पढ़ना रुचिकर होगा। बच्चे घटनाक्रम के वर्णन में अन्तर देख कौतुक से भर उठे। *न्यू यॉर्क टाइम्स* ने साधारण आकार के शब्दों में खबर को पृष्ठ के बीच में छापा था। खबर में सूचना के सभी स्रोतों का

उल्लेख था, जैसे "नौसेना के अनुसार" या "जर्मन समाचार पत्र के अनुसार"। इधर *न्यू यॉर्क न्यूज़* ने इस खबर को सबसे महत्वपूर्ण खबर मानते हुए मुखपृष्ठ पर मोटे-मोटे अक्षरों में छापा था। तीसरे पृष्ठ पर उस खबर का लम्बा विवरण था जिसमें बताए गए स्रोत थेः "एक चश्मदीद ने कहा..." या "माना यह गया...।" लेख की भाषा इतनी नाटकीय थी कि बच्चों को लगा मानो समूचा स्कॉटलैण्ड या तो लड़ रहा था या आश्रय स्थलों में दुबकने के लिए भागा जा रहा था। जबकि *टाइम्स* में हवाई हमलों के बारे में एक ही पंक्ति थी और समाचार के शेष भाग का रिश्ता चेम्बरलेन की उस रपट से था जो उसने संसद में पेश की थी।

बुधवार, 8 नवम्बर

आज मैंने अन्य अखबारों में स्कापा फ्लो घटना से सम्बन्धित समाचार को पढ़ा और उनमें नज़र आ रहा अन्तर एक बार फिर से रेखांकित हुआ। बच्चों को तथ्यों और मतों के बीच अन्तर नज़र आने लगा है। *न्यू यॉर्क जर्नल अमेरिकन* में इस घटना पर कोई लेख नहीं था, पर एक सम्पादकीय ज़रूर था। सम्पादकीय में घटना के वर्णन से प्रारम्भ कर ब्रितानी नौसेना की कमज़ोरियों को रेखांकित किया गया था और सारा दोष रूज़वेल्ट पर थोपा गया था। थॉमस को इनमें कोई जुड़ाव नज़र नहीं आया और उसने कहा, "वह रूज़वेल्ट को नापसन्द करता है, है ना? लगता है कि वह स्कापा फ्लो की घटना की आड़ में उससे बदला ले रहा है।" तब हमने इस बात पर विचार किया कि कोई अच्छा अखबार अपने लेखों में क्या करने की कोशिश करता है। उसकी कोशिश यह रहती है कि तथ्यों को सही-सही सामने रखा जाए जिससे लोग एक सच्ची छवि बना सकें। ऐसा अखबार सूचनाओं के स्रोतों का उल्लेख करता है और भावनाओं के बदले तर्क पर बल देता है।

शुक्रवार, 10 नवम्बर

बच्चों के किसी समूह को खुद अपनी देखभाल करते देखना कितना सन्तोष देता है। लगता है मेरे ये बच्चे अपने रोज़मर्रा के अनुभवों से खुद को सिखा-पढ़ा रहे हैं। अपने इर्द-गिर्द जो चीज़ें वे देखते या सुनते हैं उनके बारे में उनकी जिज्ञासा बढ़ रही है। मार्था सम्भवतः सबसे ज़्यादा जिज्ञासु और सक्रिय है। वह

अपना रोज़ का काम जल्दी खत्म कर लेती है और तब काफी शोध या प्रयोग करती है, खूब कविताएँ लिखती है और फिर भी नन्हों को कहानी सुनाने का समय निकाल लेती है। ऐसा समय भी आता है जब वह बेवकूफी भरी हरकतें करती है और खिझाती है। अक्सर हम उस समय तक उस पर कोई ध्यान नहीं देते जब तक वह फितूर खत्म न हो जाए। उसे धीरे-धीरे यह समझ आने लगा है कि जब वह सहयोग और योगदान करती है तो लोग उस पर ज़्यादा ध्यान देते हैं।

एलिस और पर्ल में कुछ कलात्मक क्षमताएँ हैं। दोनों लड़कियाँ इस दिशा में कुछ इस प्रकार बढ़ रही हैं जिसकी मुझे कोई सम्भावना पहले नहीं दिखती थी। जब तक किसी बच्चे में निहित योग्यताओं को उजागर करने, उन्हें विकसित करने के बहुत सारे अवसर न उपलब्ध हों, तब तक पता भी नहीं चल पाता है कि उस बच्चे में किस-किस तरह की योग्यताएँ दबी पड़ी हैं। सभी प्रिन्लैक बच्चों में ऐसा कुछ खास तो है जिसे सहेजा जाना चाहिए। स्टैनली सुबह जब आता है तो कुछ शर्माता है, पर हमेशा मुस्कुराकर "मस्ते" कहता है। धीरे-धीरे वह कुछ खुलने लगता है और हरेक गतिविधि का आनन्द लेने लगता है। एलिज़ाबेथ फ्लोरेंस की अच्छी दोस्त है। फ्लोरेंस कहती है, "मुझे एलिज़ाबेथ पसन्द है, वह बड़ी अच्छी है।"

वॉल्टर डैमरॉश आज फिर से रेडियो पर था और हमने उसका कार्यक्रम सुना। मार्था इस बात से बेहद खुश हुई कि उसने बीथोवन की धुनें पहचान लीं, जिन्हें हमने पिछले साल गाया था। कई बच्चों ने उन गीतों को रेडियो पर सुना है जिन्हें हम स्कूल में गाते हैं।

सोमवार, 13 नवम्बर

हमने अखबारों का अध्ययन जारी रखा। खबरें कैसे एकत्रित की जाती हैं यह जानने के लिए हमने उनकी तारीखों को देखा। बच्चों को पता चला कि एपी, यूपी, आईएनएस जैसी समाचार एजेंसियाँ हैं जो उन छोटे अखबारों को भी विदेशों के समाचार उपलब्ध करवाती हैं जो खुद अपने संवाददाता यूरोप आदि नहीं भेज सकतीं। *न्यू यॉर्क टाइम्स* व *हैराल्ड ट्रिब्यून* में कई समाचारों के साथ "विशेष फोन द्वारा" या "विशेष केबल द्वारा" लिखा हुआ था। बच्चे यह समझ सके कि ऐसा केवल बड़े अखबार ही कर सकते हैं।

अब तक हमने लेखों व सम्पादकीयों में जितने अन्तर जाने थे उनको संक्षेप में दोहराया। एक अच्छा लेख सही तथ्य प्रस्तुत करता है, विश्वसनीय स्रोतों से सूचना लेता है, सभी पक्षों को सामने रखता है तथा समाचार को सनसनीखेज़ नहीं बनाता। एक अच्छा सम्पादकीय अखबार के सम्पादक का मत सामने रखता है, तथ्यों का सही उपयोग करता है और ओछापन नहीं दर्शाता। बच्चे अपने अखबार के लिए लेख व सम्पादकीय लिखने को अब तैयार हैं। अब तक वे जिस तरह स्कूल का अखबार निकालते रहे हैं, उससे बच्चों का असन्तोष दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है।

पठन के पीरियड के बाद मैंने समूह को वह रूसी क्रिसमस कथा सुनाई जो श्रीमती रेमसे ने हमारे लिए उपलब्ध करवाई थी। बच्चों को कहानी बेहद पसन्द आई और वे उसका नाट्य रूपान्तर करने को आतुर हैं।

लॉयड ने कहा कि वह अपनी सीट बदलना चाहता है। उसका कहना था कि वॉरेन और वह इतने अच्छे दोस्त हैं कि बातचीत का लालच बरबस ही होता है। उसे पता था कि अगर वह अपनी जगह बदलता है तो इससे उसकी इच्छाशक्ति मज़बूत होगी और उसका काम भी बेहतर होगा। समूह के बच्चे कुछ देर उसकी बात पर सहानुभूति से हँसे, तब कुछ स्थान बदले गए और लॉयड गम्भीरता से काम करने जुट गया।

मंगलवार, 14 नवम्बर

नाट्य रूपान्तर का पीरियड रोचक रहा। सभी बच्चे योगदान करने को आतुर रहते हैं और बड़े विश्वास से हिस्सा लेते हैं, पर लॉयड और डेनियल दोनों नए बच्चे अपवाद हैं। तीन साल पहले नाटकों की शुरुआत करते समय पुराने बच्चे जैसी बेवकूफी भरी हरकतें करते थे, ठीक वैसी ही हरकतें ये बच्चे भी कर रहे हैं। डेनियल ने आखिरकार चन्द पंक्तियों का योगदान किया, यद्यपि ऐसा करते समय उसका चेहरा लाल हो उठा था। दूसरे बच्चों ने सहानुभूति दर्शाई और उसे सहज करने की सभी सम्भव कोशिशें कीं। उन्होंने उसे दिशा देने के लिए उससे कई सवाल पूछे और अपनी ओर से कुछ जोड़ा भी।

शुक्रवार, 17 नवम्बर

हम मौजूदा घटनाओं के अध्ययन के साथ-साथ समाचार पत्रों का अध्ययन भी

जारी रखे हुए हैं। मार्था ने विल्सन के चौदह सूत्रीय कार्यक्रम पर एक रपट पेश की और उसका पक्का विश्वास था कि अगर इस कार्यक्रम पर पूरी तरह अमल किया जाता तो शायद आज हम युद्ध में न फँसे होते। उसने अपनी बातों के लिए तर्क दिए।

वॉल्टर डेमरॉश ने आज सरल व मिश्रित कठिन धुनों की चर्चा की। बच्चों को मिश्रित धुनों को सुन उन्हें पहचानने में बड़ा मज़ा आया।

सोमवार, 20 नवम्बर

बड़े समूह के बच्चे आज एक फिल्म देखने गए। फिल्म का नाम था "मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन" (श्री स्मिथ वॉशिंगटन में)। उन्हें खूब मज़ा आया। मार्था तो वापस लौटने तक को तैयार न थी।

मंगलवार, 21 नवम्बर

कल रात जो फिल्म देखी थी, आज उस पर बात हुई। यह चर्चा भी हुई कि कोई प्रस्तावित बिल कानून कैसे बनता है, बिलों को पेश कैसे किया जाता है, संसदीय प्रक्रियाएँ कैसी होती हैं और उनमें बाधा कैसे डाली जाती है, बोलने व मत प्रकट करने की आज़ादी क्या है तथा प्रमुख अखबारों पर ताकतवर लोगों का नियत्रंण का क्या मतलब है। इन बच्चों के लिए अखबारों व सेंसरशिप ने नए अर्थ ले लिए हैं।

बुधवार, 22 नवम्बर

पिछले कुछ दिनों से नन्हे मुझे अचरज में डालने की कोई योजना बनाते रहे हैं। वे अपनी योजना को छुपाए रखने में सफल भी रहे हैं। आज उन्होंने मुझे कहानी वाले पीरियड में खास तौर पर बुलाया। फ्लोरेंस ने घोषणा की, "मिस वेबर, आपके लिए जो नाटक तैयार किया गया है उसका नाम है *रिकैटी रैकेटी मुर्गा*। हम यह नाटक इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हमें कहानियों का पीरियड बेहद पसन्द है।" इसके बाद जो प्रस्तुति उन्होंने दी उससे मैं इतनी खुश हुई कि लगभग मेरे आँसू ही निकल आए। उन्होंने मंचन को जिस भावना के साथ प्रकट किया काश मैं शब्दों में उसका बयान कर पाती। मार्था, जिसने इसका निर्देशन किया था, मंचन के दौरान मेरे पास ही बैठी थी। वह फुसफुसाई, "कुछ गलतियाँ हों तो उन

पर ध्यान न दीजिएगा, मिस वेबर। ये कुछ शर्मा और घबरा रहे हैं।" मेरा धन्यवाद पर्व (Thanksgiving) तो इस प्रस्तुति से धन्य हो गया।

सोमवार, 27 नवम्बर

बच्चों ने अपने अखबार को नया रूप देने पर विचार प्रारम्भ कर दिया है। आज हमने व्यावसायिक समाचार पत्रों को देख उन खण्डों की सूची बनाई जिनमें अखबार सामान्यतः विभाजित होते हैं। हमने वे हिस्से हटा दिए जो हमारे अखबार में शामिल नहीं हो सकते थे, जैसे वित्त सम्बन्धी पृष्ठ। तब हमने फिर से व्यावसायिक अखबारों को देख उनके नामों की उपयुक्तता पर ध्यान दिया। बच्चों ने गौर किया कि कुछ अखबारों के दो नाम हैं। वॉरेन को सम्पादकीय पृष्ठ के कोने में यह सूचना मिली कि *हैराल्ड ट्रिब्यून* किसी समय दो अखबारों के रूप में छपता था, पर बाद में दोनों मिला दिए गए। अखबारों के संयुक्त होने की तिथि भी दी गई थी। मैंने बच्चों से सवाल किया कि दोनों अखबारों की दृष्टि से उनका यों जुड़ जाना अच्छा क्यों रहा होगा। बच्चों ने आसानी से तार्किक उत्तर दिए, कि इससे उनकी पाठक संख्या बढ़ती है, उनके पास उपलब्ध राशि बढ़ती है, और वे अपने संवाददाताओं को अधिक मेहनताना दे सकते हैं और उनके उपकरण बेहतर हो सकते हैं।

आज क्लब बैठक के बाद जब मैं कमरे में घुसी तो मुझे सभी बच्चों ने कहा, "यह अब तक की सबसे अच्छी क्लब बैठक रही है।" बाद में वॉरेन ने बताया कि उन्होंने "मिस्टर स्मिथ गोज़ टू वॉशिंगटन" से काफी कुछ सीखा था।

मंगलवार, 28 नवम्बर

कितना व्यस्त दिन था! हमने वे सारे विभाग तय कर लिए थे जिनमें हम अपने अखबार को बाँटना चाहते थे और हमने प्रत्येक विभाग के लिए एक-एक सम्पादक चुना। बच्चों को लगा कि अगर उन्हें वास्तव में लोकतांत्रिक होना है तो उनका भी एक प्रतिनिधि स्टाफ में होना चाहिए और नन्हे बच्चों को भी अपने विभाग के लिए खुद अपना सम्पादक चुनना चाहिए। बाल पृष्ठ का सम्पादक फ्लोरेंस को चुना गया। इसके बाद संवाददाताओं को लिखने के लिए लेख बाँट दिए गए। लेख तैयार होने के बाद सम्बन्धित सम्पादक को सौंपे जाएँगे जो उन्हें स्वीकार या अस्वीकार कर सकेगा या फिर सुधार के सुझाव देगा। जब

शारीरिक शिक्षा का पीरियड आया तो बच्चों ने अपने लेख समाप्त करने के लिए समय चाहा क्योंकि वे अपने विचारों के ताने-बाने को तोड़ना नहीं चाहते थे। पर ग्यारह बजे वे खेलने को उठ गए क्योंकि वे काफी देर कुर्सियों से चिपके रहे थे।

बुधवार, 29 नवम्बर

हवा में क्रिसमस की भावना तैर रही है और बच्चे ताबड़तोड़ कई काम खत्म करने की कोशिशों में जुटे हैं। नाटक प्रगति पर है। क्रिसमस के उपहार तैयार करने की होड़ के कारण दिन के कुछ समय हमारी शाला कार्यशाला में तब्दील हो जाती है। इस आपाधापी के दौरान भी सभी सम्पादक कुछ समय लेखों को जाँचने और सुस्त लेखकों को उकसाने के वास्ते निकाल लेते हैं। लड़कों ने क्रिसमस के लिए सजावट की मालाएँ आदि बनाने की सामग्री जुटा ली है। नन्हे अपनी कविताओं और कहानियों की पुस्तिकाएँ बना रहे हैं। वे अपने मौलिक गीतों की संगीत पुस्तिकाएँ और इस अध्ययन की पुस्तिकाएँ भी बना रहे हैं कि प्रकृति सर्दियों की तैयारी कैसे करती है। इसके अलावा, वे अपने माता-पिता के लिए क्रिसमस उपहार भी बना रहे हैं। और इस सबके बीच वे कुछ समय रोज़मर्रा के पठन, वर्तनी और गणित के लिए भी बचा लेते हैं।

सोमवार, 4 दिसम्बर

हवाई द्वीपों और फिलिपीन्स के कुछ मेहमान आज आए और बच्चों ने फिर से यह दर्शा दिया कि उन्होंने अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से शुरुआत करते हुए अपने अध्ययन को गहरा कर कितनी तथ्यात्मक सामग्री जुटा ली है। मेहमानों को अचरज हुआ कि बच्चों को फिलिपीन्स के राष्ट्रपति का नाम मालूम था और वे हवाई द्वीपों की कुछ समस्याओं से भी परिचित थे। बच्चों ने मेहमानों से जानना चाहा कि क्या फिलिपीन्स के लोग सच में संयुक्त राज्य अमरीका से स्वतन्त्र होना चाहते हैं। उन्होंने वहाँ के स्कूलों के बारे में भी सवाल पूछे और जानना चाहा कि उनका देश कैसा है। मेहमानों ने अपनी जुबान में गीत गाए और बातचीत की। बदले में हमने अमरीकी लोकगीत गाए और अमरीकी लोकनृत्य प्रस्तुत किए।

बुधवार, 6 दिसम्बर

अखबार के सम्पादक मण्डल ने स्कूल के बाद अखबार की तैयारी के लिए बैठक की। हमने अखबार के प्रत्येक पृष्ठ के लिए भूरे कागज़ की बड़ी शीटें काटीं। तब सबसे पहले उसके ले-आउट पर सोचना शुरू किया गया। सम्पादकों ने तय किया कि सामग्री तीन स्तम्भों में पेश की जाएगी, क्योंकि उससे कम में वह अखबार नहीं कहलाएगा और उससे अधिक के लिए जगह ही नहीं बचती थी। उन्होंने अखबार का नाम बदला, नगर उद्घोषक को अपना प्रतीक चुना और अपना नारा चुना, "सब कुछ सुने – सब कुछ बताए"। उन्होंने तय किया कि चूँकि सबसे महत्वपूर्ण काम जो हम कर रहे हैं वह अखबारों का अध्ययन है, सो इस विषय पर लिखा लेख दाहिनी ओर के स्तम्भ में होना चाहिए और उसका शीर्षक सबसे मोटे अक्षरों में छपना चाहिए। तब उन्होंने भूरे कागज़ पर उन जगहों पर लेख चिपकाने शुरू किए जो उनके अनुसार सबसे उपयुक्त जगहें थीं। पाँच बजे तक काम सलटा नहीं था और समूह की घर जाने की इच्छा भी नहीं थी।

गुरुवार, 7 दिसम्बर

आज सुबह मैंने तय किया कि शेष बच्चों को भी यह अनुभव मिलना चाहिए क्योंकि यह इस समूह के लिए इतना आनन्ददायक व कीमती रहा है। जो बच्चे कल रात बैठक में शामिल हुए थे, वे आलेखों के प्रूफ पढ़ने और उन्हें फिर से लिखने में जुटे और बाकी बच्चे ले-आउट में मदद करने लगे। बच्चे जिस लगन से काम कर रहे थे उसे देखना बड़ा सन्तोषजनक था। लॉयड एक बढ़िया सम्पादक है और लेखों में गुणवत्ता पर बल देता है। उसकी पेंसिल निरर्थक शब्दों को हटाने में तथा उन वाक्यों के सामने सवालिया निशान लगाने में व्यस्त रहती है जो स्पष्ट नहीं हैं।

बुधवार, 13 दिसम्बर

अखबार का पहला संस्करण निकल चुका है। हमने उसे साथ-साथ पढ़ने में करीब घण्टा भर लगाया और हमें विश्वास है कि हमारे अब तक के सभी प्रयासों में यह श्रेष्ठतम है। एल्बर्ट बोल उठा, "वाह! हम सच में बढ़िया हैं।" वे अपने हर परिचित व्यक्ति को अखबार की प्रति देना चाहते हैं। उन्हें गर्व करने का

वास्तव में हक है! थॉमस ने आज एक महत्वपूर्ण टिप्पणी की जिसने मुझे आगामी चरणों के बारे में दिशा दी। उसने कहा, "हमें बारह पन्नों की अखबार जुटाने में महीने भर की कड़ी मेहनत करनी पड़ी है। बड़े अखबार इतना सारा काम हर रोज़ भला कैसे कर लेते होंगे?" मैंने बच्चों को सुझाया कि हम क्रिसमस के बाद किसी अखबार के कार्यालय और छापाखाने को देखने जा सकते हैं।

मंगलवार, 26 दिसम्बर

पिछले दो सप्ताह इस कदर व्यस्त रहे कि डायरी में कुछ भी दर्ज करने का समय न मिला। पर मैं इस समय की कुछ छवियाँ ज़रूर दर्ज कर लेना चाहती हूँ। बच्चों द्वारा प्रस्तुत नाटक काफी सफल रहा, यद्यपि कुछ समय तक मुझे यह डर था कि ऐसा नहीं हो सकेगा। लॉयड, जिसे एक महत्वपूर्ण किरदार निभाना था, पगला गया और उसने पर्दे के पीछे काफी बातचीत और गड़बड़ी की। कार्यक्रम शुरू होने से पहले वह पूछता रहा, "मुझे घबराहट हो रही है, मिस वेबर। क्या मैं ठीक लग रहा हूँ? मैं अपनी भूमिका ठीक से निभा लूँगा न?" मानो उसके अलावा नाटक में कोई दूसरा बच्चा महत्वपूर्ण ही न हो।

अगले दिन समूह कमरे की सफाई करने और उसे फिर से कक्षा की शक्ल देने के लिए इकट्ठा हुआ। इस काम के दौरान बच्चों ने नाटक की चर्चा की। उन्हें लॉयड का नज़रिया पसन्द नहीं आया था, सो यह बात उन्होंने लॉयड से कही। विलियम को भी लॉयड की बातों में आकर बहक जाने पर कुछ सुनाया गया। हेनरी और डेनियल के बेहतरीन काम की प्रशंसा हुई। बच्चे अपने प्रदर्शन से सन्तुष्ट नहीं थे और उन्हें लगा कि पिछले सालों जैसा प्रदर्शन वे इस बार नहीं दे पाए थे। उनकी मुख्य आलोचना यह थी कि कलाकारों ने संवाद साफ-साफ नहीं बोले और न ही वे भावनाओं को ठीक से अभिव्यक्त कर पाए।

दर्शकों को नाटक पसन्द आया और उन्होंने बच्चों की खूब तारीफ की। सफाई के समय बच्चों की बातचीत से मुझे लगा कि वे दर्शकों की प्रशंसा से फूलकर कुप्पा नहीं हुए थे। उनकी स्वयं से ऊँची अपेक्षाएँ हैं और वे अपनी गलतियों को बखूबी पकड़ लेते हैं।

जो लड़कियाँ हाई स्कूल में जाने लगी हैं वे चाहती हैं कि वे संगीत के लिए स्टोनी

ग्रोव में आती रहें। हम अक्तूबर से सप्ताह में एक बार मिलते रहे हैं। क्रिसमस के कार्यक्रम में इन लड़कियों को गाने का अवसर मिला। उन्होंने माइकेल प्रेटोरियस द्वारा संगीतबद्ध की गई धुन पर सोलहवीं शताब्दी का गीत "लो, हाउ अ रोज़", एक अँग्रेज़ी स्तुति गीत "द् हॉली एण्ड द् आइवि", व "साइलेन्ट नाइट", एक जर्मन स्तुति गीत गाया। सभी गीत तीनों सप्तकों में गाए गए और बेहद अच्छे थे। लड़कियों के कण्ठ सुरीले हैं और अभिव्यक्ति बढ़िया है। इस माह बच्चों ने कई कविताएँ रचीं और वे सब उनके अनुभवों को सामने रखती थीं। बच्चों को बर्फ पसन्द आई और सिर से पैर तक उससे ढक जाने पर उन्हें मज़ा आया। उनके अवलोकन पैने हैं जैसा कि बर्फ सम्बन्धी उनकी कविताओं में झलकता है।

1940 की गर्मियाँ

साल के बचे हुए महीनों में मैं डायरी में पूरी टिप्पणियाँ दर्ज नहीं कर पाई। पर इस दौरान कई ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्हें दर्ज कर लेना चाहिए। इनमें सबसे महत्वपूर्ण घटना थी एक अध्ययन जो अखबारों में बच्चों की रुचि से जन्मा था।

दिसम्बर माह में मैंने बच्चों को *जिम ऑफ द प्रेस* नामक पुस्तक पढ़कर सुनाई थी। यद्यपि यह पुस्तक हाई स्कूल स्तर के बच्चों के लिए लिखी गई थी, पर अखबारों की समझ की पृष्ठभूमि पहले से मौजूद होने के कारण बच्चे उससे काफी कुछ सीख सके। अखबारों के अध्ययन और इस पुस्तक को पढ़ने से उपजी समझ से लैस ये बच्चे 6 जनवरी को *ईस्टन एक्सप्रेस* के भवन में अखबार का कामकाज देखने-समझने गए। उन्होंने अखबार का कम्पोज़िंग कक्ष, लिनोटाइप बैटरी (Linotype battery) और अखबार बनाने व छापने की पूरी प्रक्रिया देखी। उनकी रुचि इतनी गहरी थी और उन्होंने इतने सारे सवाल पूछे कि हमारे गाइड ने टिप्पणी की, "इन्होंने कुछ भी नहीं छोड़ा, है ना?"

लौटते समय उनकी बातचीत लगातार जारी रही। बच्चों को सभी कामों की रफ्तार पर अचरज हो रहा था। उन्हें लिनोटाइप मशीन सबसे आकर्षक लगी। एक-एक अक्षर हाथों से कम्पोज़ करने से यह प्रक्रिया कितनी अलग थी। श्री मैथ्यूज़, जो हमें अखबार के दफ्तर ले गए थे, ने बताया कि जब वे चीन में थे तब वे वहाँ एक छोटा अखबार छापते थे। उस वक्त उन्हें अक्षर-अक्षर जोड़कर

शब्द बनाने पड़ते थे। ऐसा करना आँखों, हाथों और स्नायुओं पर ज़ोर डालता था। लॉयड ने कहा कि जिस व्यक्ति ने लिनोटाइप मशीन ईजाद की वह ज़रूर बड़ा चतुर रहा होगा। "यह मशीन भला किसने बनाई और इसे बनाने का विचार उसे कैसे आया!" उसने पूछा। वॉरेन ने पूछा, "छपाई की खोज कितने साल पहले हुई? मैंने पुरानी छपाई मशीनों के चित्र देखे हैं। वे उन मशीनों से बिलकुल अलग लगती हैं जो आज हमने देखी हैं।" एल्बर्ट की खास रुचि चित्रों की छपाई में थी। उसने चित्रों के ब्लॉक और उन पर उभरे नन्हे बिन्दुओं को बड़े ध्यान से देखा था। "ये बिन्दु उन्होंने कैसे बनाए?" वह जानना चाहता था। लौटते समय हम काउंटी पुस्तकालय में रुके और वहाँ छपाई से सम्बन्धित सभी किताबें इकट्ठी कीं और राज्य पुस्तकालय से कुछ दूसरी पुस्तकें मँगवाने का आवेदन भी दिया।

अगले दिन हमने इसी यात्रा पर और बातें की। पहले कुछ समय तो हमने यही चर्चा की कि अखबारों का कितना प्रभाव है। एल्बर्ट का कहना था कि सम्प्रेषण के कई दूसरे साधन भी हैं – रेडियो, फोन, टेलीग्राफ आदि। थॉमस ने कहा कि अखबारों की अपनी ही विशेषताएँ होती हैं जो दूसरे साधनों में नहीं हैं। उन्हें जब मर्ज़ी उठाकर पढ़ा जा सकता है और जितनी बार चाहे पढ़ा जा सकता है जब तक सारे तथ्य दिमाग में न आ जाएँ। इसी समय समूह ने तय किया कि सत्र के शेष दिनों में अगर हर सुबह एक अखबार स्कूल में आए तो अच्छा रहे। मुझे स्कूल कोष से कुछ पैसे खर्चने की अनुमति दी गई और एक अखबार लगवा ली गई। बच्चों ने पूरे साल अखबार में रुचि दिखाई और अकेले या समूह में उसको पढ़ने में काफी समय बिताया। जैसे ही सुबह अखबार पहुँचता, कुछ बच्चे उस पर नज़र दौड़ाने झुण्ड-सा बना लेते। उसकी खबरें दोपहर के वार्तालाप का विषय बन जातीं। खासकर पर्ल को इसमें खूब मज़ा आता रहा।

जब बच्चों ने पुस्तकालय से लाई गई पुस्तकों में छपाई के विषय में पढ़ना शुरू किया तो उन्हें इसमें इतना मज़ा आने लगा कि वे अक्सर दूसरों को कुछ हिस्से पढ़कर सुनाने लगे। "ज़रा सुनो तो सही," कोई कहता, और दूसरे उसे सुनने को थम जाते। एक किताब में लिखा था कि जॉन गुटनबर्ग ने छपाई मशीन का आविष्कार किया था। एक दूसरी किताब में लिखा था कि इसके आविष्कारक गुटनबर्ग नहीं बल्कि चीनी लोग थे। बच्चों ने कुछ बातें दर्ज कीं ताकि वे बाद

में चर्चा कर सकें। लॉयड ने पुस्तकें पढ़कर उनमें से नोट लिख लेने का काम पहले कभी नहीं किया था, सो उसे यह सिखाने में मैंने कुछ समय लगाया।

बाद में हुई चर्चा के दौरान बच्चों ने तय किया कि उन्हें कुछ विषयों पर अधिक जानकारी तलाशनी होगी। ये विषय थे:

- गुटनबर्ग
- सचल टाइप (movable type) का आविष्कार
- गुटनबर्ग से पहले छपाई का स्वरूप
- प्रिंटिंग प्रेस में हुए सुधार
- यूरोप तथा अमरीका में छपाई का प्रसार
- लिनोटाइप
- कॉस्टर (Coster), फुस्ट (Fust) व कैक्सटन (Caxton)
- चित्रों की छपाई।

हरेक बच्चे ने अपनी रुचि का विषय चुना और उस पर शोध में जुट गया। वॉरेन शहर के समाचार पत्र के छापाखाने में गया ताकि लिनोटाइप पर जानकारी ले सके। क्योंकि यह अखबार साप्ताहिक है, वहाँ काम करने वाले लोग अधिक व्यस्त नहीं थे और उसके लिए समय निकाल सके। वॉरेन ने कॉम्पटन के एन्साइक्लोपीडिया (Compton's Encyclopedia) में पढ़ रखा था कि लिनोटाइप कैसे काम करता है, सो वह उनको मशीन के बारे में बताने लगा। छापाखाने में काम करने वाले उससे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे लिनोटाइप चलाने व अपना नाम व पता छापने की अनुमति दी। वॉरेन ने समूह को सगर्व अपना छपा हुआ नाम व पता दिखाया और कहा कि वह कुछ रोज़ उसे हमारे अजायबघर में रखेगा।

दो दिन तक इस विषय पर पढ़ने के बाद हमने छपाई के आविष्कार पर चर्चा की। हमने जाना कि सचल टाइप का आविष्कार तो वाकई चीनी लोगों ने किया था, पर उनकी वर्णमाला नहीं थी, सो यह उनके लिए व्यावहारिक नहीं रहा। चालीस हज़ार चित्र संकेतों को व्यवस्थित रखना कठिन काम था। एडवर्ड ने पूछा, "वे कोई वर्णमाला क्यों नहीं अपना लेते? जो व्यवस्था वे काम में लेते हैं, वह कैसे विकसित हुई?" डेनियल ने जानना चाहा कि हमें हमारी वर्णमाला कैसे

मिली? बच्चों ने पढ़ा कि गुटनबर्ग को सचल टाइप द्वारा छापने का विचार चीन से आए ताश के पत्तों से मिला था। इस पर उन्हें यह जानने की इच्छा हुई कि यूरोपवासियों को ताश के पत्ते चीन से कैसे मिले? मार्था ने पढ़ा कि यह कागज़ बनाने की खोज थी जिसने छपाई को व्यावहारिक बनाया। हेनरी ने जानना चाहा कि कागज़ से पहले लोग क्या काम में लेते थे। कागज़ आखिर बनता कैसे है? हेनरी की रुचि मार्को पोलो में भी है, और वह इतनी ज़्यादा है कि वह पढ़ते समय लगातार समूह के दूसरे बच्चों को कुछ न कुछ बताता रहता है, फलतः कई बच्चे उसके कन्धों पर झुके नज़र आते हैं। उसने यह पता लगाया कि मार्को पोलो ने पूर्व के विषय में यूरोपवासियों की रुचि जगाई थी, इसलिए ही यह सम्भव हो सका कि गुटनबर्ग चीनी ताश पत्तों से खेल रहा था। हमने उन विषयों की सूची बनाई जिनके बारे में हमें और जानकारी एकत्रित करनी थीः

- वर्णमाला की खोज
- कागज़ बनाने की खोज
- कागज़ के आविष्कार के पहले की लेखन सामग्री
- मार्को पोलो
- धर्मयुद्ध (Crusades)
- मार्को पोलो के समय का चीन
- गुटनबर्ग के समय का यूरोप

अब विषयों की संख्या इतनी हो चुकी थी कि हरेक बच्चे ने अपना एक निजी विषय चुन लिया। तब शोध घण्टों, रिपोर्टों, चर्चा सत्रों और फिर से शोध का सिलसिला शुरू हुआ। उन्होंने अपना योगदान दिया और सवाल पूछे, जिससे रिपोर्ट प्रस्तुत करने वालों को फिर से अपनी पुस्तकों पर लौटना पड़ा। जैसे-जैसे रिपोर्टें लिखी जाने लगीं, उनके विषय उप-विषयों में बँटने लगे। उदाहरण के लिए, गुटनबर्ग के काल में यूरोप को निम्न उप-भागों में बाँटा गयाः

- मठवासी साधु व मठ
- महलों का जीवन व युद्ध
- नगर व शिल्पी संघ

"वर्णाक्षरों की खोज" के विषय से निम्न उप-विषय उपजेः

- इन्का संस्कृति के लोग व उनका लेखन
- अमरीकी इण्डियन लोगों का लेखन
- रॉलैण्ड की गाथाएँ व गीत
- मिस्रवासी
- फोनेशियावासी
- यूनानी
- रोमवासी

इधर हम पढ़ते और समूह के सामने अपने पढ़े हुए को प्रस्तुत करते जा रहे थे, उधर हमने जो बातें दर्ज कीं उनकी मात्रा बढ़ती जा रही थी। बच्चों ने शोध कर टिप्पणियाँ दर्ज की थीं। उसके अलावा वे टिप्पणियाँ भी थीं जो उन्होंने एक-दूसरे की प्रस्तुतियों के दौरान ली थीं। इस सारी सामग्री का क्या करना है, यह एक समस्या बन गया। फेंक देने के लिए यह सामग्री बेहद मूल्यवान थी, पर बेतरतीब व अव्यवस्थित रूप में उसकी कोई खास कीमत भी न थी। थॉमस ने मज़ाक में कहा, "हमें एक किताब लिख डालनी चाहिए, हमारे पास इतनी सामग्री है।" मैंने उसे चौंकाते हुए कहा, "क्यों नहीं?" इस पर हमने जितना सोचा, उतना ही ऐसा करना हमें समझदारी का काम लगा। तब हम सच में इस काम में जुट गए, और हमने अपनी टिप्पणियाँ दर्ज करने में पूरी सावधानी बरती ताकि वे सही व पूरी हों। बच्चों को अपने शोध के दौरान अगर किसी ऐसे विषय पर कोई जानकारी मिलती जिस पर कोई दूसरा बच्चा काम कर रहा हो, तो एक सन्दर्भ कार्ड बनाकर उस बच्चे को थमा दिया जाता। जब बच्चे अपनी-अपनी रिपोर्ट तैयार कर लेते, तो वे किसी तयशुदा दिन उसे प्रस्तुत करने के लिए अपना नाम लिखवा लेते। तब समूचा समूह ध्यान से सुनता, सुझाव देता और आलोचना करता।

थॉमस ने एक दिन धर्मयुद्धों पर रिपोर्ट सामने रखी। उसे बड़ी परेशानी हुई, क्योंकि वह किताब में इस्तेमाल किए गए शब्दों को काम में लेने की कोशिश कर रहा था। मैंने उसे सुझाव दिया, "जो लिखा है उसे भूल जाओ और अपने शब्दों में बात कह डालो।" तब धर्मयुद्धों की रोमांचकारी कथाएँ व युद्ध के दौरान खून-खराबे का उसने धुआँधार वर्णन किया। उसने बच्चों के धर्मयुद्ध (Children's Crusade) का नाम लिया भर था और हेलेन ने सुझाया कि उसे उसके

लिए *बॉय ऑफ द लॉस्ट क्रूसेड* नामक पुस्तक से सामग्री मिल सकती है।

जब एल्बर्ट ने साधुओं पर अपनी रिपोर्ट रखी तो मार्था ने उससे पूछा, "तुमने *गैब्रियल एण्ड द आवर बुक* पढ़ी है? वह बेहद खूबसूरत पुस्तक है। मिस वेबर आपको वह हमें पढ़कर सुनानी चाहिए।"

कुछ रिपोर्टें बेहद तरतीब से तैयार की गई थीं। लॉयड ने पुस्तकों के विकास पर रिपोर्ट तैयार की। उसके सामने मेज़ पर वे सारे नमूने रखे थे जिनसे गुज़रते हुए पुस्तकों का मौजूदा स्वरूप विकसित हुआ था। वह बात करते हुए नमूने दिखाता जा रहा था। उसने बताया कि चर्मपत्र (parchment) का चीरक (scroll), जो पुस्तक का प्राचीनतम रूप था, अक्सर सोलह से अठारह फुट तक लम्बा हुआ करता था। चीरक पर एक सिरे से दूसरे सिरे तक लिखा जाता था और वह ऊपर से नीचे की ओर खुलता था। उसने बताया कि बौद्ध ग्रन्थ चीरक की पूरी लम्बाई में लिखे होते थे और उन्हें उसी तरह खोला जाता था। पर चूँकि इन्हें पढ़ा नहीं जाता था, इससे असुविधा नहीं होती थी। हिब्रू में लिखे कानून सम्बन्धी चीरकों में लेखन अलग-अलग स्तम्भों में होता था। ऐसे चीरकों के पृष्ठाकार लेखन ने किसी के मन में यह विचार जगाया होगा कि उन्हें अकॉर्डियन की तरह मोड़ दिया जाए और लकड़ी के टुकड़ों के बीच दबा दिया जाए। इससे पुस्तकों को रखना आसान बन गया। लॉयड ने एक-एक कर अपने चीरकों को उठाकर दिखाया कि उसका क्या मतलब था। उसने हिब्रू चीरक को समूह के सामने तह किया। फिर उसने कैंची उठाई और तह किए हुए चीरक को तहों से काट डाला, जिससे अगला चरण साफ हो गया। अब पृष्ठ के दोनों तरफ लिखना सम्भव हो गया और हमारी आधुनिक पुस्तकों का रूप सामने आया। उसने नमूनों को अजायबघर में रख दिया।

एडवर्ड और जॉर्ज को शोध करना बेहद कठिन लग रहा था और उनकी रुचि भी तब तक जगी नहीं थी जब तक हमने कागज़ बनाने के प्रयोग नहीं शुरू कर दिए। इन लड़कों ने बॉन्सर व मॉसमैन की पुस्तक *इन्डस्ट्रियल आर्टस् इन द् एलीमेन्टरी स्कूल* ("प्रारम्भिक शाला में औद्योगिक कलाएँ") के निर्देश पढ़ कागज़ बनाने का एक साँचा तैयार किया। हमने पुस्तक के निर्देशों के अनुसार अखबारी कागज़ भी बनाया। इसमें हम सफल रहे। पर चर्मपत्र बनाने की हमारी कोशिश अधिक सफल नहीं रही, क्योंकि हम भेड़ की खाल को ठीक से तान

नहीं सके। हम पैपायरस (papyrus) से भी कागज़ बनाना चाहते थे और हमने औद्योगिक कला सहकारी सेवा को अपना ऑर्डर भी भेजा। वे फ्लौरिडा से पैपायरस मँगवाते हैं। पर इस साल वहाँ इतनी ठण्ड पड़ी कि पैपायरस की तीनों फसलें बर्बाद हो गईं।

बच्चे हमारे अजायबघर में लगातार चीज़ें जोड़ते रहे। उन्होंने लकड़ी का गूदा, व्यावसायिक चर्मपत्र का टुकड़ा, खुद का बनाया चर्मपत्र, खुद का बनाया कागज़, *ईस्टन एक्सप्रेस* के दफ्तर से लाया गया कार्डबोर्ड का साँचा, खुदे हुए ताम्रपत्र, उपनिवेशकाल की मोम की टिकियाएँ, बेबिलोनिया की मिट्टी की टिकियाओं का प्रतिचित्र, हिब्रू कानून संहिता का प्लास्तर से बना प्रतिरूप तथा *ईस्टन एक्सप्रेस* में हमारे दौरे के बाद अगले सोमवार को छपी हमारे समूह की तस्वीर प्रदर्शन के वास्ते रखे। हमने पुस्तकालय में भी नई पुस्तकें जोड़ीं जिससे ताकें ठसाठस भर गईं। सप्ताह के अन्त में एक दिन लड़कों ने मिलकर हमारे कक्ष के एक तरफ खिड़कियों के नीचे दीवार की पूरी लम्बाई में नई ताकें बना डालीं। पुस्तकों और अजायबघर की चीज़ों को ज़रा फैलाकर रख दिया गया। इस व्यवस्था से हमारा कमरा सजीला भी लगने लगा और सुविधाजनक भी। एक दिन वॉरेन ने टिप्पणी की कि हमारा कमरा अब स्कूल जैसा नहीं लगता।

बच्चे समूहों में जा काउंटी पुस्तकालय से किताबें लाते रहे हैं। उन्होंने किताबों से प्यार करना सीख लिया है और वे उनकी अच्छी देखभाल भी करते हैं। यद्यपि इस साल हमने कई सौ किताबें काम में लीं, बच्चों ने एक भी किताब को नुकसान नहीं पहुँचाया है।

जब सारी सामग्री इकट्ठी हो चुकी तो समूह एक सम्पादकीय मण्डल में बदल गया। हमने बोर्ड पर उन सभी विषयों की सूची बनाई जिन पर हमने जानकारी जुटाई थी। हमने सूची का गौर से अध्ययन किया और तब विभिन्न विषयों को समेटते हुए निम्नलिखित शीर्षक बनाए:

अखबारों से सम्बन्धित:

- अखबार की छपाई
- लिनोटाइप मशीन
- चित्रों की छपाई
- छापा मशीनें (प्रेस)

छपाई की खोज के विषय में:

- सचल टाइप की खोज
- गुटनबर्ग की जीवनी
- गुटनबर्ग से पहले छपाई
- धर्मयुद्ध
- मार्को पोलो: मध्ययुगीन जीवन
- महलों का जीवन
- नगर
- साधु व मठ

वर्णमाला के विषय में:

- लिपि की खोज
- इन्का लोग
- अमरीकी इण्डियनों का लेखन
- रोलैण्ड का गीत
- गुफा लेखन
- मिस्र की चित्रलिपियाँ
- फोनेशियावासियों द्वारा लिपि का प्रसार
- रोमवासियों द्वारा लिपि का प्रसार

लेखन सामग्री से सम्बन्धित:

- मिस्र के अभिलेख
- गड़ेरियों द्वारा प्रयुक्त चमड़ा
- बेबिलोनिया की मिट्टी की टिकियाओं पर लेखन
- चीन का अखबारी कागज़
- पुस्तकों के स्वरूप का विकास
- पैपायरस के चीरक

प्राचीन सभ्यताओं के विषय में:

- मिस्र
- यूनान

- रोम
- बेबिलोनिया
- सुमेरिया
- एसिरिया
- चैल्डिया
- फोनेशिया

आधुनिक लेखन सामग्री से सम्बन्धितः

- पेन
- पेंसिलें
- कागज़
- पुस्तक बनाना

बड़े बच्चों के समूह में पन्द्रह बच्चे थे। (कार्टराइट बच्चे क्रिसमस के बाद स्कूल से चले गए थे।) मैंने पाँच सबसे सक्षम बच्चों को प्रथम सम्पादन समिति में लियाः वॉरेन, हेलेन, मार्था, लॉयड व थॉमस। शेष बच्चे अन्य पाँच समितियों में बँट गए। पहले दिन मैं प्रथम समिति से मिली और उन्हें सामग्री का सम्पादन करना समझने में मदद की। हमने यह प्रक्रिया अपनाईः

1. सभी लेखों को पढ़कर उनकी विषय-वस्तु से परिचित होना।
2. सामग्री को व्यवस्थित कर अध्यायों में बाँटना।
3. अध्यायों को परस्पर जोड़ने के लिए कुछ अनुच्छेद लिखना ताकि वे अलग-थलग न रहकर एक निरन्तर कथा का रूप ले लें।
4. अगर आवश्यक लगे तो अध्यायों में शामिल लेखों में फेरबदल करना ताकि अनुच्छेदों में उभारे गए बिन्दुओं को रेखांकित किया जा सके।
5. समूची सामग्री को भाषा व वर्तनी की अशुद्धियाँ सुधारने के लिए पढ़ना।

मैंने समूह को स्वयं काम करने के लिए छोड़ दिया। जब वे तैयार थे, मार्था ने समूह के सामने रिपोर्ट पेश की। उसने बताया कि उन्होंने किस तरीके से काम किया और तब विभिन्न विषयों पर लिखे अनुच्छेद पढ़े व उन पर आलोचनात्मक टिप्पणी आमंत्रित की।

इस समिति ने समूची सामग्री को क्रम से चार अध्यायों में बाँटा था। यह क्रम था:

- एक अखबार की छपाई
- लिनोटाइप
- छपाई मशीनें
- चित्रों की छपाई

उन्होंने अपने पहले अध्याय के प्रारम्भ में लिखा: "ताज़ा घटनाओं की जानकारी हम तक पहुँचाने का एक फुर्तीला उपाय है अखबार। कोई अखबार यह कैसे करता है इसकी कहानी बड़ी रोचक है।"

पहले अध्याय को दूसरे से जोड़ने के क्रम में उन्होंने लिखा: "अगर लिनोटाइप न होता तो अखबारों की छपाई की प्रक्रिया बेहद सुस्त रहती। चतुर व कुशाग्र ऑटमार मार्गेनथालर के कारण, जिन्होंने लिनोटाइप मशीन का आविष्कार किया, हमें घटनाओं की जानकारी लगभग उनके घटते ही मिल जाती है।"

तीसरा अध्याय उन्होंने इन शब्दों से शुरू किया: "छपाई प्रेस हमेशा इतनी कुशल नहीं हुआ करती थी जितनी आज है। प्रारम्भिक प्रेस काफी सरल और अनगढ़-सी थी।"

चौथा अध्याय इस तरह शुरू किया गया था: "चित्र अखबारों का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। छपाई के लिए उन्हें बड़े रोचक तरीके से तैयार किया जाता है।"

इसके बाद इस समिति का हरेक सदस्य अन्य समितियों का अध्यक्ष बना ताकि वह सम्पादन में उन समितियों को दिशा दे सके। जब एक समिति का काम खत्म हो जाता, उसके सदस्य सुझावों व आलोचनात्मक टिप्पणियों के लिए समूह के सामने रिपोर्ट पेश करते। उन सुझावों पर विचार करके वे आलेखों में बदलाव करते। काम की कमी नहीं थी, क्योंकि संशोधनों के बाद भाषा व वर्तनी सुधारने का बहुतेरा काम होता था। बच्चों ने अपने आलेखों को बारम्बार लिखा। हरेक आलेख समूह के लगभग हरेक सदस्य द्वारा पढ़ा गया। हमारी कई मुख्य कठिनाइयों पर चर्चा अँग्रेज़ी के पीरियड में होती। अन्तिम नतीजे में न केवल अद्‌भुत तथ्यपरकता थी बल्कि अभिव्यक्ति का सौन्दर्य भी। काम में कई महीने लगाने पड़े, पर सच कहें तो इस काम पर बिताया हरेक पल सार्थक रहा।

समूह संख्या दो ने अपनी सामग्री को छह अध्यायों में बाँटा:

- सचल टाइप की खोज
- गुटनबर्ग से पूर्व छपाई
- धर्मयुद्ध व छपाई
- मार्को पोलो
- छपाई का प्रसार
- मध्यकाल में पुस्तकें

उन्होंने जो विषय अनुच्छेद लिखे, वे थे: "पाँचवाँ अध्याय: लकड़ी पर खोदे गए ब्लॉकों के द्वारा छपाई करना धीमी और कठिन प्रक्रिया थी। जब सचल टाइप की खोज हुई तब जाकर छपी हुई सामग्री चुनिन्दा लोगों के दायरे से निकलकर अधिक लोगों को उपलब्ध हो सकी। सचल टाइप खोजने का श्रेय हम जॉन गुटनबर्ग को देते हैं।"

इस प्रकार यह खण्ड पिछले खण्ड से जुड़ा और उसमें गुटनबर्ग की जीवनी व उनके आविष्कार का वर्णन दिया गया।

"छठा अध्याय: जैसा हम कह चुके हैं, गुटनबर्ग से काफी पहले ही चीन के निवासी एक प्रकार की छपाई की खोज कर चुके थे।"

"सातवाँ अध्याय: अगर धर्मयुद्ध न होते तो सचल टाइप व छपाई का आविष्कार सम्भवत: काफी समय बाद होता। धर्मयुद्धों के कारण यूरोपवासियों के समक्ष एक नई दुनिया ही खुल गई।"

यह अध्याय इन शब्दों के साथ समाप्त हुआ: "कुछ धर्मयोद्धा लौटते हुए अपने साथ ताश के पत्ते लेते आए। ऐसे ही ताश के पत्तों से गुटनबर्ग को सचल टाइप का विचार आया। छपाई प्रक्रिया की खोज के कारण ही यह सम्भव हुआ कि मार्को पोलो व अन्य साहसी यात्रियों की यात्राओं के वृत्तान्त छप सके। इन यात्रा वृत्तान्तों के साथ यह विचार अन्य लोगों तक पहुँचा कि वे पूर्व तक पहुँचने के लिए अज्ञात व खतरनाक समुद्री मार्गों को तलाशें।"

और अगला अध्याय उन्होंने इस तरह से शुरू किया: "पूर्व में रुचि जगाने वालों की सूची में केवल धर्मयोद्धाओं का नहीं बल्कि मार्को पोलो का उल्लेख भी

ज़रूरी है। इसी रुचि के चलते कई वस्तुओं की खोज सम्भव हुई।"

इस अध्याय का आखिरी अनुच्छेद पहले अनुच्छेद का अर्थ स्पष्ट करता है: "जब तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर कब्ज़ा कर लिया और पूर्व में काफी अशान्ति फैली हुई थी, तो अब तक के ज्ञात व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गए जहाँ से विलास-प्रेमियों को अपनी वस्तुएँ मिलती थीं। तब कोलम्बस को यह सूझा कि वह पूर्व दिशा तक पहुँचने के लिए पहले पश्चिम की ओर जाए। धर्मयुद्धों और मार्को पोलो ने न केवल यूरोप में छपाई का द्वार खोला बल्कि एक नई सभ्यता का मार्ग भी खुल गया।"

"नवाँ अध्याय: सचल टाइप की खोज के बाद यूरोपीय देशों में तेज़ी से छपाई का प्रसार हुआ।"

इस अध्याय में आगे चलकर यह बताया गया है कि किस प्रकार यूरोप भर में तेज़ी से किताबें छपने लगीं। अध्याय के अन्त में लिखा गया है: "जब यूरोप की विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें उपलब्ध हो चलीं तो पढ़ने में व शिक्षा प्राप्त करने में लोगों की रुचि भी बढ़ी। इससे दुनिया में कई बदलाव आए। इस तथ्य का कि अब कुछ लोग पढ़-लिख सकते थे प्रोटेस्टेंट धर्म के प्रचार-प्रसार में बड़ा भारी हाथ था।"

"दसवाँ अध्याय: पुस्तकों की छपाई से पहले पढ़ने-सीखने में रुचि कम थी। उस दौरान एक समूह था जिसने ज्ञान को जीवित रखा था। यह समूह प्राचीन दुनिया की पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ बनाता था। यह समूह था मठवासी संन्यासियों का।"

यह अध्याय मठवासी साधुओं के जीवन का वर्णन करता है और उसकी तुलना नगरों व कस्बों में रहने वाले अन्य लोगों से करता है, और यह कहते हुए बात खत्म करता है: "ऐसी ही दुनिया में जॉन गुटनबर्ग का जन्म हुआ था और इसी प्रकार की दुनिया ने छपाई का आविष्कार किया।"

शेष समितियों ने भी अपनी सामग्री को ठीक इसी तरह सुव्यवस्थित किया। पाँच अन्य अध्याय पुस्तक में जोड़े गए:

- वर्णाक्षरों का आविष्कार
- लेखन सामग्री

- प्रारम्भिक सभ्यताएँ
- आधुनिक लेखन सामग्री
- पुस्तक निर्माण

सूचना एकत्रण के दौरान ज़रूरत पड़ने पर हम प्राचीन पृष्ठभूमियों तक खोदते रहे और तब वापस वर्तमान तक आते रहे। कालक्रम का हम सबको बोध रहे इस वास्ते हमने कालक्रम (time line) की मदद ली। अध्ययन समाप्त हुआ तब हमने तय किया कि इस कालक्रम को भी हमें अपनी पुस्तक में शामिल कर लेना चाहिए। हमने अपनी किताब में सन्दर्भ पुस्तक सूची (bibliography) भी जोड़ी।

बच्चों ने किताब के लिए निम्नलिखित चित्र भी बनाए:

- पुरानी लकड़ी की छपाई मशीन
- ठप्पा व छापा (Punch and Matrix)
- एक धर्मयोद्धा
- पाण्डुलिपि का एक प्रभासित पृष्ठ
- प्राचीन काल में रिकॉर्ड रखने की विभिन्न विधियाँ
- पेरूवियन क्विपू* (Peruvian Quipu)
- खाँचेदार छड़ (Notched Stick)
- भूर्ज वृक्ष की छाल
- मिस्र की चित्रलिपियाँ
- चीनी अक्षराकृतियाँ
- हम एबीसी तक कैसे पहुँचे
- लेखन सामग्री
- मिस्र का पैपायरस
- बेबिलोन की कीलाक्षर लिपि
- यूनान की मोम की तख्तियाँ
- पुस्तकाकार किताबें कैसे आईं
- एक आधुनिक किताब कैसे तैयार होती है

---

* रंग-बिरंगे धागों से विभिन्न तरह की गाँठें लगाकर प्राचीन इन्का लोगों का रिकॉर्ड रखने का तरीका।

क्योंकि हम सत्र के अन्तिम दिन तक सम्पादन का काम करते रहे थे, यह आवश्यक हो गया कि बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में भी कुछ दिन स्कूल आएँ। इन दिनों में बच्चों ने पन्ने मोड़कर उन्हें पृष्ठों की शक्ल दी, उन पर चित्रों को ट्रेस किया। मैंने समूची किताब टाइप की। बच्चों ने फर्मों को जोड़ा और हम सबने मिलकर बोर्ड व चर्मपत्र से उसकी जिल्द तैयार की। हेलेन ने लाइनोलियम का एक ठप्पा तैयार किया जिससे चीरक की आकृति छापी जा सकती थी; अन्तिम पृष्ठ इसी से छापे गए। यों हमारी मेहनत से एक बेहद खूबसूरत किताब तैयार हुई जो हमारे लिए बेशकीमती थी। मेरे एक मित्र ने उसकी उसी तरह की प्रतियाँ बनाने का प्रस्ताव रखा जैसे हमने उसे बनाया था। इसके लिए उसने किताब के हर एक पन्ने के फोटोग्राफ लिए और तब उसकी इतनी प्रतियाँ बना दीं कि हरेक बच्चे के पास इसकी निजी प्रति हो। हमने काउंटी पुस्तकालय को और कुछ अन्य मित्रों को भी उसकी प्रतियाँ भेंट कीं।

इस अध्ययन का एक अन्य रोचक अनुभव भी रहा। 25 मई को हम न्यू यॉर्क शहर के मेट्रोपॉलिटन आर्ट म्यूज़ियम को देखने गए थे। वॉरेन ने म्यूज़ियम के साथ पत्राचार किया था और हमारे लिए एक गाइड की व्यवस्था करवा दी थी। श्री ग्रीयर ने हमें दौरा करवाया और प्राचीन सभ्यताओं के लेखों के प्रामाणिक प्रतिरूप दिखाए। उन्होंने बच्चों को मिस्र की चित्रलिपियों के प्रतीक पढ़ना भी सिखाया। मिस्र, क्रीट, यूनान व रोम की सभ्यताओं की लेखनी व लेखन सामग्री के उदाहरण भी दिखाए। बच्चों ने बेबिलोनिया की मिट्टी की तख्तियाँ, यूनान की मोम से बनी पट्टियाँ व मिस्र के पैपायरस के चीरक देखे। बच्चों को प्रभासित पाण्डुलिपियाँ सबसे आकर्षक लगीं। श्री ग्रीयर पुस्तकालय से चर्मपत्र की पाण्डुलिपियाँ लाए और उन्होंने सावधानी से उसके पृष्ठ पलटे। बच्चे उन पृष्ठों को अचम्भे और सराहना से भरे देखते रहे।

बच्चों ने म्यूज़ियम में ममियाँ और उनके ताबूत, प्राचीन मिस्र के आभूषण, काम करने के औज़ार और अस्त्र-शस्त्र भी देखे। उन्होंने पिरामिड, प्राचीन रोम के आवास और एक मठ की आकृतियाँ देखीं। उन्होंने सामन्ती कवच देखा। यहाँ तक कि उन्होंने आधे घण्टे का एक चलचित्र भी देखा जिसमें बताया गया था कि म्यूज़ियम के गवेषक मिस्र में खुदाई कर किसी कब्र को कैसे तलाशते हैं और ममी पर लिपटी पट्टियाँ कैसे हटाई जाती हैं। इस तरह बच्चों को कई ऐसी

बातें समझ आईं जिन्हें वे अध्ययन के दौरान साफ-साफ समझ नहीं सके थे।

इस अध्ययन के अनुभव पर नज़र दौड़ाने पर पाती हूँ कि मैं अपना उद्देश्य हासिल कर पाई हूँ। बच्चे खुद सोचने लगे हैं, जो समझ व आदर्शों के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण है। उनका सोचना लगातार तात्कालिक अनुभवों से जुड़ा रहा अन्यथा वे विचार बच्चों के लिए बंजर और बेमानी ही रहते। अब दुनिया में अपने स्थान की बेहतर समझ उनमें पनपी है। स्कूली सत्र के शेष दिन भी इतने ही सार्थक व समृद्ध रहे जितने इस अध्ययन के दौरान थे। यह अध्ययन इतना फलदायी व सार्थक न होता अगर वह वातावरण ही नामौजूद होता जिसमें बच्चों को लगातार समृद्ध अनुभवों को जीने का स्थान मिल सके और जिसमें रोज़मर्रा के जीवन की समस्याओं को समझने और उनके समाधान तलाशने में उन्हें लगातार मदद मिले। दो अन्य घटनाओं को भी यहाँ दर्ज करना आवश्यक लगता है क्योंकि ये दोनों इस तथ्य की पुष्टि करती हैं कि जहाँ कहीं शिक्षण में समान अवसर उपलब्ध होते हैं, वहाँ कुशाग्र बच्चे उत्पीड़ित हो मध्यम दर्जे के नहीं बन जाते, बल्कि वे अपनी क्षमताएँ अधिकतम सीमा तक विकसित कर पाते हैं।

बसन्त के एक दिन मैंने बड़े बच्चों की मानक उपलब्धि परीक्षा ली। क्योंकि परीक्षा लेने में सारा दिन लगा, इस दौरान छोटे बच्चों के करने के लिए कोई काम तलाशने में मुझे परेशानी हुई। तब मार्था ने मदद का प्रस्ताव रखा। वह परीक्षा की पूर्व संध्या को कुछ किताबें घर ले गई और उसने उनके लिए पाठ तैयार किए। अगली सुबह उसने पाठ योजनाएँ मुझे दिखाईं। ये योजनाएँ बड़ी सावधानी से सोच-विचारकर तैयार की गईं थीं, उतनी ही सावधानी से जितनी शायद मैं बरतती। यहाँ तक कि उसने प्रत्येक पाठ के उद्देश्य का भी उल्लेख किया था। मार्था ने उनके खेलघर के आसपास बागबानी करने में नन्हों की मदद की। वे सैर को गए और लौटने पर जो कुछ उन्होंने देखा था उसकी कथा लिखने में मार्था ने उनकी मदद की। उन्होंने अपना पठन सत्र जारी रखा और कहानी सत्र के समय स्वतःस्फूर्त मंचन भी किया। मार्था ने हाथ-मुँह धोने और दोपहर को आराम करने के समय उनका ध्यान रखा। वे खेले, उन्होंने गीत गाए, कुछ छपाई की और मिट्टी की आकृतियाँ बनाईं। उनके घर लौटने से पहले मार्था ने उन्हें वर्तनी और गिनती में भी मदद की। अगर कोई बारह साल की बच्ची

नन्हों के एक समूह को पूरे दिन न केवल सम्हालती है बल्कि उन्हें गतिविधियों द्वारा खुश व व्यस्त भी रख पाती है, तो वह शब्द के समग्र अर्थों में "शिक्षित" हो रही होती है।

दूसरी घटना भी मार्था से ही जुड़ी है। हमेशा की तरह इस बसन्त को भी हमने एक कठपुतली प्रदर्शन किया। शाला भवन में यह कार्यक्रम तीन बार हुआ और हमें आमंत्रण मिला कि हम कस्बे के हाई स्कूल व ब्लेयर अकादमी में भी इस कार्यक्रम को प्रस्तुत करें। प्राथमिक कक्षा के बच्चों ने "नन्हा काला सैम्बो" कहानी का मंचन किया। इसे पूरी तरह मार्था ने तैयार करवाया था। उसने कठपुतलियाँ तैयार करने में और कहानी को नाटक का रूप देने में नन्हों की मदद की। मार्था ने उन बच्चों को चुनने में मदद की जिन्हें प्रदर्शन में भूमिकाएँ निभानी थीं। एरिक नन्हा सैम्बो बना। मार्था इस शर्मीले बच्चे की ऐसी छुपी क्षमताएँ उभार सकी, जिन तक मैं पहुँच ही नहीं पाई थी। उसने हर बच्चे की ज़िम्मेदारी उसे कुछ ऐसे समझा दी कि वह मंचन के समय आराम से दर्शकों के बीच बैठ सकी और अपनी मेहनत के नतीजे का लुत्फ उठा सकी। कार्यक्रम खत्म हुआ तो मेरी नज़रें मार्था की नज़रों से टकराईं और हम दोनों शिक्षिकाओं को पता था कि हमने अपना काम बखूबी किया है।

उपसंहार

इस चौथे साल की समाप्ति पर मैंने स्टोनी ग्रोव छोड़ दिया। अगर मैं इन पृष्ठों में इन बच्चों को ज़रा भी जीवन्त बना सकी हूँ तो आपके मन में यह सवाल उठ रहा होगा, "आखिर इन बच्चों का आगे क्या हुआ? वे अब क्या कर रहे हैं?" इन प्रश्नों के जवाब इतने अहम हैं कि उनके बिना इस किताब का उद्देश्य पूरा नहीं होगा।

एना ओल्सेउस्की और ओल्गा प्रिन्लैक ने हमारे स्कूल को सबसे पहले छोड़ा था। एना कस्बे के हाई स्कूल में दाखिल हुई और उसने ऑनर्स के साथ पढ़ाई खत्म की। फिर वह हमारे समुदाय से निकल गई और एक बड़े शहर में सेक्रेटरी पद पर काम करने लगी।

ओल्गा को हाई स्कूल में पढ़ने की अनुमति नहीं मिली, क्योंकि उस वक्त उसके पिता का शिक्षा में भरोसा नहीं था, खासकर लड़कियों के लिए। ओल्गा को न्यू यॉर्क में घरेलू कामकाज करने भेजा गया। अपनी पहली बचत से उसने अपने दाँतों का इलाज करवाया। उसके बाद से वह नियमित रूप से घर पर पैसे भेजती रही है ताकि उसके छोटे भाई-बहनों के लिए कपड़े खरीदने में परिवार को मदद मिले। अपने माता-पिता को अपनी छोटी बहनों की पढ़ाई जारी रखने को मनवाने में उसकी काफी भूमिका रही है।

फ्रैंक प्रिन्लेक, रैल्फ जोन्स और कैथरीन सामेटिस ने जून 1938 में स्टोनी ग्रोव छोड़ा।

फ्रैंक कुछ समय तक एक बड़े फल-बागान में काम करता रहा। एक दिन जब मैं काउंटी के दौरे पर थी तो मैं दोपहर का खाना खाने एक ढाबे में रुकी। अन्दर एक कर्मचारी किसी पुरुष से कह रही थी, "शर्त लगाती हूँ कि फ्रैंक को खोने का तुम्हें बड़ा दुख हो रहा होगा।" "दुख!" वह बोल उठा, "वह अब तक का